Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका



दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 26 अंक 9 30 सितम्बर, 2026 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से



डा. महेन्द्र सिंह मलिक

युगपुरूष जननायक चौधरी देवीलाल

(25 सितंबर, जन्मदिवस पर विशेष)



हरियाणा के निर्माता रहे स्वर्गीय चौधरी देवीलाल सिर्फ स्वतंत्रता सेनानी, किसानों, गरीबों, मजदूरों और कमेरे वर्ग के मसीहा ही नहीं थे बल्कि एक युगपुरुष थे। उनकी करनी और कथनी में कोई फर्क नहीं था और वे बेहद संघर्षशील, जुझारु व निर्भीक राजनेता थे जिनकी जड़ें जमीन और देश के आम जनमानस के साथ जुड़ी हुई थीं। युगपुरुष, स्वतंत्रता सेनानी, निर्भीक किसान नेता चौधरी देवी लाल का जन्म, 25 सितंबर, 1914 को वीरों की धरती हरियाणा के सिरसा जिला के गांव तेजाखेड़ा में चौधरी लेखराम सिहाग के घर हुआ। चौधरी देवीलाल की प्राथमिक शिक्षा गांव चौटाला में हुई तथा इसके बाद उन्होंने डबवाली के सरकारी स्कूल से मिडल परीक्षा पास की। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्होंने 1927 में मोगा शहर के एसडी स्कूल में प्रवेश ले लिया। यह ऐसा समय था, जब संपूर्ण भारत में स्वतंत्रता की लपटें उठ रही थीं। क्रांतिकारियों से प्रेरित होकर चौधरी देवी लाल का किशोर मन भी राष्ट्र की सेवा की और आकर्षित होने लगा। फरवरी, 1927 में जब साइमन कमीशन भारत आया तो कांग्रेस ने इसके पूर्ण बहिष्कार का फैसला किया था। चौधरी देवीलाल भी अपने को इससे अछूता न रख पाए तथा अपने एक मित्र चौधरी बलवीर सिंह के साथ दिसंबर, 1929 को लाहौर में कांग्रेस के अधिवेशन में सम्मिलित हुए। उनके स्कूल के प्रधानाचार्य उनके इस रवैये से काफी नाराज हुए और उन्हें छात्रावास से निकाल दिया गया। परंतु किशोर देवी लाल अपनी जिद पर अटल रहे और स्कूल छोड़ दिया। वे मात्र 15 वर्ष की आयु में अपने घर वालों को बिना बताए ही आजादी के आंदोलन में कूद पड़े।

चौधरी देवीलाल एक सशक्त एवं क्रांतिकारी व्यक्तित्व के धनी थे। अन्याय व अत्याचार का मुकाबला करने के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे। उन्होंने देश के किसानों के शोषण के विरुद्ध जोरदार आवाज उठाई थी, क्योंकि युग–युग से पीड़ित व शोषित किसान तथा ग्रामीण समुदाय के प्रति उनका असीम प्रेम था। जनता के हक की लड़ाई को वे 'न्याय–युद्ध' कहते थे। वे सच्चे अर्थों में गांधीवादी होने के साथ–साथ सरलता, सज्जनता, सादगी, तप और त्याग की प्रतिमूर्ति थे। उनका ग्राम स्वराज और ग्राम पंचायत व्यवस्था में अटूट विश्वास था। वे स्वतंत्रता संग्राम के नायक होने के साथ–साथ ग्राम स्वराज की लड़ाई लड़ने वाले एक अप्रतिम योद्धा थे। 1987 में दोबारा मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने देशभर के विपक्षी दलों को कांग्रेस के खिलाफ एक मंच पर इकट्ठा किया और देश में जनता दल के गठन में अहम्म भूमिका निभाई। उनके प्रयासों से ही 1989 में जनता दल की सरकार बनी और कांग्रेस शासन को देश से उखाड़ फेंकने वाले चौधरी देवीलाल को सर्वसम्मति से देश का प्रधानमंत्री चुन लिया गया। जुबान के धनी चौधरी देवीलाल ने अपना वचन निभाते हुए अपना प्रधानमंत्री पद का ताज वीपी सिंह के सिर पर रख दिया। त्याग का इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकते है कि उन्होंने प्रधानमंत्री के पद को भी ठुकरा दिया और उप–प्रधानमंत्री बनना स्वीकार किया। यह उनके 75 वर्ष के राजनीतिक जीवन में नैतिक मूल्यों और आदर्शों की सबसे ऊंची उड़ान थी। अपने संघर्षमय जीवन में चौधरी देवी लाल हार–जीत की परवाह नहीं करते थे। वे 1956 में तत्कालीन संयुक्त पंजाब में मुख्य संसदीय सचिव भी रहे और हरियाणा बनने से पूर्व संयुक्त पंजाब की विधानसभा में उपेक्षित हरियाणा के विकास के लिए अपनी आवाज बुलंद की। उनके ही संघर्ष का परिणाम था कि 1966 में हरियाणा का अलग राज्य के रूप में गठन हुआ।

चौधरी देवीलाल किसानों की लड़ाई वातानुकूलित कमरों में बैठ कर नहीं लड़ते थे। गांव–गांव और चौपालों तक उनकी सीधी पहुंच थी इसीलिए उन्हें सम्मानपूर्वक ताऊ के नाम से संबोधित किया जाता था। लोगों के बीच गांव में चारपाई पर बैठकर हुक्का पीते–पीते ही वे जन समस्याएं सुनते थे और अधिकांश का मौके पर ही निराकरण कर देते थे। पुलिस व सिविल प्रशासन की जवाबदेही तय करने के लिये खुले जनता दरबार लगाने की प्रथा शुरू की। चौधरी देवीलाल को जनतंत्र के मंच पर लोकप्रियता के लिए लेन–देन, सौदेबाजी और बनावट नहीं आती थी। वे स्पष्ट वक्ता थे और कहा करते थे कि 'लोक राज, लोक लाज से चलता है। लड़ाई तो लुटेरों और कमेरों के बीच है। इस देश में पूंजीपति, सत्ता से रिश्ता जोड़कर काश्तकारों और गरीब जनता का भरपूर शोषण करते हैं। यह व्यवस्था बदली जानी चाहिए।' वे नहीं चाहते थे कि चंद पूंजीपति, गणतंत्र पर हावी हो जाएं।

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

अतः उन्होंने कभी भी उद्योगपतियों, पूंजीपतियों और साहूकारों से चुनाव हेतु धन लेने की बजाय 'एक नोट, एकवोट' का नारा दिया।

सादगी और सरलता ही उनके जनसंचार की शैली का माध्यम था। चौधरी देवीलाल व भारत में बी.बी.सी. के मुख्य संवाददाता रहे मार्क टुली के बीच दोस्ती जग जाहिर थी। 2010 में कोलकाता में "मास कम्युनिकेशन विषय पर आयोजित" एक कांफ्रेंस में मार्क टुली की स्पीच दी थी, जिसमें उन्होंने 15 मिनट तक चौधरी देवीलाल के जन–संचार के स्टाइल के बारे में बताया और कहा कि अगर जन–संचार की बारीकियां सीखनी हैं तो आपको चौधरी देवीलाल को पढ़ना पड़ेगा। स्पीच के बाद जब लेखक मार्क दुली से मिला तो उन्होंने चौधरी देवीलाल के साथ दोस्ती के अनेक किस्से सुनाए। चौधरी देवीलाल की जुबान में वह आकर्षण था कि लोगों की भाषा में बात करके वह सामने वाले को अपना बना लेते थे। इसी कारण चौधरी देवीलाल राजनीति और समाज सेवा की एक पूर्ण संस्था के रूप में जाने जाते हैं। उनके द्वारा रोपे गए पौधे अब वट वृक्ष बन चुके हैं और विभिन्न राजनीतिक पार्टियों में उनकी विचारधारा को आगे बढ़ा रहे हैं। ऐसे महान नेता राजनीति में विरले ही मिलते हैं। चौधरी देवीलाल का दिल सदैव गरीब और कमेरे वर्ग के लिए धड़कता था।

चौधरी देवीलाल ने अनभव किया कि भारत का प्रजातंत्र, नौकरशाही, नवधनवाद, नवसामंतवाद और संकीर्ण जातिवाद के चंगुल में फंस कर रह गया है। सारा प्रशासन कुछ सुविधा भोगियों के लिए तथा वर्तमान प्रजातंत्र में प्रजा शब्द अर्थहीन और गौण हो गया है और तंत्र प्रमुख। उनका मानना था हमारी संस्कृति में समाजवाद विद्यमान है, न किसी के पास ज्यादा हो न किसी के पास कम। किसानों के शोषण का उन्मूलन ही भारत का समाजवाद है। अतः देश के नीतिविदों और राजनेताओं को सावधान किया था कि कृषि क्षेत्र की देश की राष्ट्रीय आय में भागीदारी बढ़ाने के लिए गिरते पूंजी निवेशकों को रोकना होगा ताकि खेती अलाभप्रद बनकर ही न रह जाए तथा वैश्वीकरण की आंधी में कहीं चौपट ही न हो जाए। आपातकाल के दौरान अन्य राष्ट्रीय नेताओं के साथ चौधरी देवीलाल व उनके बेटे चौधरी ओमप्रकाश चौटाला को 19 महीने जेल में रखा गया। आपातकाल की समाप्ति के बाद देश में जनता पार्टी का शासन स्थापित हुआ और 21 जून, 1977 को उन्होंने पहली बार हरियाणा के मुख्यमंत्री के पद को सुशोभित किया। दूसरी बार 1987 में वे फिर से हरियाणा के मुख्यमंत्री बनें और जनता को स्वच्छ प्रशासन दिया। 'भ्रष्टाचार बंद और बिजली–पानी का प्रबंध', 'प्रशासन आपके द्वार', 'हर खेत को पानी, हर हाथ को काम', 'हर तन पै कपड़ा, हर सिर पै मकान', तथा 'हर पेट में रोटी, बाकी बात खोटी', उनके प्रिय नारे थे। उन्होंने पहली बार देशभर में दस हजार रुपए तक छोटे किसानों के ऋण माफ कराए और हरियाणा में वृद्धों को मासिक वृद्धावस्था सम्मान पेंशन, बेरोजगारों को साक्षात्कार के लिए मुफत यात्रा सुविधा, न्यूनतम मजदूरी में बढ़ोतरी, किसानों को बिजली और पानी की निरंतर आपूर्ति तथा कृषि उत्पादों का उचित मूल्य दिलाया।

हरिजन के घर पर पहला बच्चा पैदा होने पर 300 रूपये, दूसरा बच्चा होने पर 500 रूपये की ग्रांट राशि, हरिजन लडकी की शादी के लिए सरकार द्वारा 5100 रूपये की कन्यादान सहायता राशि, खानाबदोश व घुमंतु लोगों के बच्चों द्वारा स्कूल जाने पर प्रतिदिन एक रूपया की व्यवस्था, गावों तथा शहरों में शुद्ध पीने के पानी की व्यवस्था, मार्केटिंग बोर्ड द्वारा गांव–गांव में सडकों का निर्माण, सरकारी रोजगार प्राप्त करने हेतू उम्मीदवारों की अधिकतम आयु सीमा 30 वर्ष से बढ़ाकर 35 वर्ष करना, काम के बदले अनाज की योजना, गांव व शहर के विकास के लिए अद्भुत मैचिंग ग्रांट योजना, पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए नंबरदारी का पद सुरक्षित करना, नई कृषि नीति की घोषणा, खुले जनता दरबार, बड़े–बड़े पांच सितारा होटलों में चौपाल की व्यवस्था आदि शुरू की जिनका आज समस्त राष्ट्र में अनुकरण किया जा रहा है, जो कि उनका ऐतिहासिक कल्याणकारी व जनक्रांति की सोच का परिणाम है। इन्ही समाज व जनकल्याणकारी योजनाओं के कारण जनता ने चौ० देवीलाल को जननायक का दर्जा दिया और वह पूरे देश में 'ताऊ' के नाम से मशहूर हुये।

निंसदेह यह बहुत गर्व एवं सम्मान की बात है कि चौधरी देवीलाल एक ऐसी अकाल्पनिक एवं अद्भुत प्रतिभा के स्वामी थे जिन्होने अपना संपूर्ण जीवन जनता जनार्धन के मूल अधिकारों के हित की लड़ाई के लिए समर्पित कर दिया तथा सदैव ही उनके पथ को उजागर किया और मार्गदर्शन के लिए संघर्षशील रहते थे। यद्यपि आज वे हमारे मध्य नहीं हैं किंतु उनके आदर्शमय, त्यागमय व तपोमय जीवन से हम सब भारतवासी युगों–युगों तक प्रेरणा लेते रहेंगे। 25 सितंबर को पूरा देश चौधरी देवीलाल का 113वां जन्मदिन मना रहा है। अतः राज्यस्तरीय सद्भावना सम्मान दिवस रैली द्वारा उन्हें याद करने के साथ–साथ देशभर में जगह–जगह समारोह आयोजित कर उन्हें सच्ची श्रृद्धांजलि देनी चाहिए।

इस के साथ ही चौधरी साहब की जन कल्याणकारी योजनाओं व निष्छल राजनीति से प्रेरणा लेकर प्रशासनिक व राजनीतिक तंत्र की विचारधारा को बदलने की आवश्यकता है ताकि ग्रामीण गरीब–मजदूर व किसान वर्ग के कल्याण व उत्थान के साथ–साथ स्वच्छ प्रशासन के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। वास्तव में ताऊ देवीलाल गरीब व असहाय समाज की आवाज को बुलंद करने वाले एक सशक्त प्रवक्ता थे इसलिए आज जन साधारण विशेषकर ग्रामीण गरीब–मजदूर, कामगार व छोटे काश्तकारों को अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है ताकि दलगत राजनीतिज्ञ व संबंधित प्रशासन इनके हितों की अनदेखी न कर सकें। अतः एक उदार हृदय एवं महान आत्मा–ताऊ देवीलाल को लेखक सदैव नत मस्तक होकर प्रणाम करता रहेगा।

लेखक 1977 से 1979, 1987 से 1989 तथा अगस्त–सितंबर 1999 से 2001 तक चौधरी साहब गुप्तचार विभाग के अधिकारी तथा पुलिस प्रमुख रहे हैं।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

जाट आर्य हैं

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत) (मो० 9466110050)

जट्ट शब्द समूह के लिए प्रयोग होता हैं। जट्ट शब्द का दूसरा अर्थ है कि जिसमें बिखरी हुई ताकतें इक्कट्ठी हो जायें। जट्ट शब्द का दूसरा अर्थ है जाट। इन दोनों का अर्थ एक ही है। यह जाट संघ आर्य राजवंशों व क्षत्रियों के संगठन से बने हैं जो कि आर्य थे। इसके कुछ उदाहरण उन जाट गोत्रों के दिए गए हैं जो कि चन्द्रवंशी आर्य चक्रवर्ती सम्राट ययाति के वंशज हैं और कुछ सूर्यवंशी (ययातिवंशी) है। जाट केवल एक हिन्दू जाति ही नहीं, वास्तव में एक नस्ल है। जातियों की पहचान के लिए अंग्रेज विशेषज्ञों ने कई साधन निकाले जैसे शारीरिक बनावट और भाषा आदि। शरीर शास्त्र के अनुसार विशेषज्ञों ने मनुष्य जाति को पांच भागों में बांटा है जैसे :– 1. आर्य 2. मंगोलियन 3. हब्शी 4 मलय (मलायापन) 5. अमेरिकन रंग के हिसाब से गौरे, काले, बादामी, लाल, पीली, काली आंखें, लम्बी बांहें व ऊंचे कद काठ के होते हैं। "हिस्ट्री ऑफ आर्यन रूल इन इन्डिया" नामक ग्रन्थ में लिखा है कि मानव तत्वविज्ञान की खोज से सिद्ध हुआ है कि भारतीय आर्य जाति, जिसको आर्यन साहित्य में लम्बे कद काठ, सुन्दर चेहरा, पतली लम्बी नाक, चौड़े कन्धे, लम्बी भुजाओं शेर की तरह पतली कमर, लम्बी टांगों वाली जाति बतलाया है। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, कश्मीर आदि प्रदेशों में यह नस्ल पाई जाति है। लम्बे कद काठ, सुन्दर चेहरा, गोरा रंग या गेहूंआ रंग, काले बाल, ऊंची गर्दन काली आंखें, पतली व लम्बी नाक आदि से भली भांति पहचाने जा सकते हैं क्योंकि जाट व आर्यन युवक का शरीर काफी फुर्तिला और गठीला होता है। इस तरह के लक्षणों को देखकर ही मि. नेसफिल्ड ने बलशाली शब्दों में कहा कि रंग रूप यदि कुछ समझे जाने वाली बात हैं तो जाट आर्यो के इलावा और कुछ नहीं हो सकते। वास्तविकता भी यही हैं कि वैदिक आर्यों के वंशज जाटों के लक्षण आज के जाटों में भी पाए जाते हैं।

सन् 1901 ई० की जनगणना की रिपोर्ट पेज 500 पर सर एच.रिजले साहब ने स्पष्ट स्वीकार किया है कि जाट शारीरिक बनावट के आधार पर आर्य हैं। कुछ देसी तथा विदेशी इतिहासकारों ने शारीरिक गठन, स्वभाव, रहन–सहन,

कभी–कभी अजनबी होना भी जरूरी होता है क्योंकि सब कुछ जानना दिमागी तनाव ही बढ़ाता है।

आचार–विचार, रिती–रिवाज, परम्पराऐं, प्रशासनिक प्रबन्ध राजनैतिक विकास पर विचार आदि उसके इलावा साहसिक प्रवृति और भूमि उत्पादन अनुसन्धान को अपना बिन्दु मानकर भारतीय जाटों को यूरोप के प्राचीन आर्य, गेटी, मैसेगटाई (महानजाट) यूचि, यति, जतिका आदि जातियों के साथ संबंध बताया है। भारतीय सीमाओं का भौगोलिक अंग होने के बाद भी भारतीय आर्य जाति के जाटों के शकद्वीप (सिन्धू प्रदेश) में जाकर बसने के कारण ही विदेशी शक, भारतीय शक अथवा इन्डोसिथियन प्रभावित करने का प्रयास किया है। भारतीय सीमान्त प्रदेश कन्धार, गजनी और यदु की पहाड़ियों को निकास का केन्द्र बिन्दू माना है। लेकिन जाट आर्य पुत्र भारत की ही सन्तान है। ब्रजमंडल और दोनों मालवा के मूल निवासी है। सम्पूर्ण जाट अपने आपको एक स्तर से यदूवंशी (चन्द्रवंशी) संतान मानते हैं जब कि इनमें सूर्यवंशी और नागवंशी शाखाओं के जाट कुटुम्ब कबिलों को भी अगर मिला लिया जाए तो हमें गहन अध्ययन से पता चलेगा कि मध्य एशिया, अरब और यूरोप में पाये जाने वाले आर्यन जाट भारतवर्ष से ही पलायन करके गए हैं क्योंकि सिन्धू घाटी की सभ्यता ही सबसे पुरानी वैदिक सभ्यताएं हैं मैसोपोटामिया और मिश्र की सभ्यता तो सिन्धू घाटी की सभ्यता से हजारो वर्ष बाद पनपी हैं।

कर्नल जैम्स टॉड का मत है कि जाट इन्डोसिथियन कुल के हैं जो कि ईसा से एक सौ वर्ष पूर्व अपने निवास स्थान ऑक्सस घाटी से पंजाब में चले गए थे। कनिघम, इब्बेटसन और विसेन्ट, स्मिथ ने इनका समर्थन किया है। जैक्सन और कैम्पबैल ने इनका संबंध कुषाण और यूचि से बताया है। डॉ० ट्रम्प और बीम्स ने शारीरिक तथा भाषा दोनों दृष्टि से जाटों को शुद्ध इन्डो आर्यन वंशज होने का दावा किया है। मिलर ने भी इनका ही समर्थन किया है। इसलिए बीम्स ने पृष्ट 128 पर कहा है कि जाट शूरसेन की पुरानी सीमाओं को छोड़कर कभी बाहर नहीं गए।

कानूनगो के अनुसार शारीरिक विशेषताओं, भाषा, चरित्र आदि से जाट वैदिक आर्यों के श्रेष्ठतम प्रतिनिधि हैं। इतिहास में जाट काफी निर्भिक लड़ाकू के रूप में जाने जाते हैं। ये मुख्यतया कृषक हैं। यही कारण है कि इस जाति ने सिन्ध, पंजाब, मध्यप्रदेश की मालवा, राजस्थान, गंगा का दोआब के पश्चिमी हिस्सों में काफी निर्माण कार्य किया। डॉ० इरविन के अनुसार 'जाट' अपने गांव की सरकार में राजपूतों की बजाय अधिक प्रजातांत्रिक होते हैं। वंशानुगत अधिकार के प्रति उनका लगाव कम होकर लोगों द्वारा चूने हुए मुखिया को प्राथमिकता देते हैं। जो कि आर्यो की रिती के अनुसार है मजबूत सामाजिक बन्धन तथा प्रशासन के प्रजातान्त्रिक विचारों की अटूट परम्परा के साथ–साथ अपने भाई की विधवा के साथ शादी का रिवाज और नियोग की मान्यता जाटों की कुछ ऐसी सामाजिक विशेषताएं है जो उन्हें हिन्दुओं के किसी उच्च जाति की अपेक्षा वैदिक आर्य होने के सच्चे प्रतिनिधि होने के दावो को सिद्ध करती है।

कर्नल टॉड ने सकन्दनाभ में जाटों की बस्तीयों का वर्णन किया है। किन्तु जिस समय सकन्दनाभ बस्तीयों का वर्णन किया है, उससे कई शताब्दी पहले भारत में जाटों का अस्तित्व पाया जाता है। जाट भारत से ही अरब, यूरोप, मध्य एशिया व पूर्वी एशिया सभी जगह भारत से ही गए है।

श्री चिन्तमणि विनायक वैघ मानते हैं कि किसी भी विदेशी इतिहास में ऐसा कहीं नहीं लिखा कि जाट किस देश से भारत में आए।

पं. इन्द्र, वेदावाचस्पति "मुगल साम्राज्य का उदय और कारण" नामक इतिहास पुस्तक में यही बात लिखते हैं कि "जब से जाटों का वर्णन मिलता है वह भारतीय ही हैं और यदि जाटों के भारत से बाहर कहीं भी निशान मिलते है तो वह भी भारत से ही गए हुए है।" (जाट इति. पृ. 65–66 डॉ. देशराज)

जाट हुणों के संबंन्धी नहीं बल्कि शत्रु थे जाटों ने हुणों का सामना किया और उनको परास्त किया। अतः जाट पंजाब के ही निवासी थे। मंदसौर के शिलालेख वाला यशोधर्मन, जिसने हुणो को लगातार परास्त किया था वह विर्क गोत्र का जाट था। जाट मालवा में भी उस समय से पहले ही सिन्ध की ही तरह पहुंच चुके थे। जाट हमेशा हुणों के विरोधी रहे हैं और जाट भारत में सबसे शुद्ध आर्य है तथा आर्यो का बाहर से आकर भारत में बसने के कोई भी प्रमाण नहीं मिलते। जाटों का भारत में आने का न तो कोई विदेशी इतिहासकारो का कथन है और न ही जाटों की अपनी ही कोई दन्त कथा है। इसके इलावा न ही कोई ऐतिहासिक व शिलालेख के प्रमाण हैं। जो कुछ थोड़ा बहुत युरोपियन इतिहासकार जाटों को सिथियन और विदेशी साबित करने की असफल कोशिश करते हैं में उनका ये केवल भ्रम मात्र ही मानता हूँ। जाट न हुणो, शको व न सिंथियनों की औलाद हैं, बल्कि वे विशुद्ध आर्य हैं। सिंथिया में भी जाट भारत से ही गए थे।

जाट ने तो सिंथियन हैं, न जथरा हैं और न ही मध्य एशिया के जथरा की पहाड़ियों से आए हैं किन्तु जाट तो सच्चे भारत माता के पुत्र हैं जिन्होंने पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, यु.पी. व मध्य प्रदेश का मालवा, गुजरात, महाराष्ट्र आदि को अपने पुरूखों का ही घर बतलाया हैं। जाटों से इस बात का स्वीकार करवाना कि वे पुराने यदुवंशीयों की संतान नहीं हैं बहुत मुश्किल हैं।

अब मानवतल अनुसंधान शास्त्र के अनुसार जाटों के आर्य होने के कुछ प्रमाण निम्न प्रकार से दिए जाते है।

जब किसी मोड़ पर ऐसा लगने लगे कि जिंदगी में अब कुछ नहीं रखा तो समझ लेना बेहतर समय अब आने वाला है।

मानवतत्व विज्ञान में की गई एक खोज के अनुसार भारतीय आर्य जाट जाति के बारे में कहा गया है कि हिन्दु वैदिक ग्रन्थों में लम्बे कद–काठ सून्दर चेहरा, पतली लम्बी नाक, चौड़े कन्धे, लम्बी भुजाएं शेर की सी कमर, हिरण जैसे पतली टांगों वाली, गोरे व गेहूं रंग की जाति बतलाया हैं जैसे कि यह प्राचीन समय में थी। आधुनिक भारत पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, यू.पी. और कश्मीर में जाट, और राजपूतो को क्षत्रिय जातियों के नाम से पुकारा जाता है। इसके अलावा पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान व अरब में 630 ई0 से पहले सभी जाट थे जिन्होंने 630 ई0 के बाद इस्लाम धर्म कबूल कर लिया था। प्राचीन आर्य जाति भारत की ही निवासी थी। इन्होंने ही विदेशों में जैसे अरब युरोप, मध्य एशिया व पूर्व एशिया में जाकर राज्य स्थापित किए और उन्हीं में से कुछ दोबारा भारत में आकर बस गए क्योंकि इनकी शारीरिक बनावट आपस में मेल खाती है।

भाषा विज्ञान के अनुसार जातियों को पहचानने का जो तरीका हैं उसके अनुसार जाट आर्य है। इसके प्रमाण मि. सर. हैनरी, एम. इलियट के सी.बी. "डिस्ट्रब्यूसन ऑफ दी रेसेज ऑफ दी नोर्थ वैसटर्न प्राविंशेज ऑफ इण्डिया" में लिखते हैं कि बहुत समय हुआ कि मैंने कराची से पेशावर तक यात्रा करके अनुभव किया कि जाट लोग कुछ खास परिस्थितियों के इलावा अन्य शेष जातियों से अधिक अलग नहीं हैं। भाषा से जो कारण बताया गया है वह जाटों और आर्यों की भाषा एक ही है क्योंकि जाट विशुद्ध रूप से आर्य ही हैं क्योंकि आर्य जाटों के इलावा बहुत कम संख्या में हैं। यदि सिथियन होते तो उनकी सिथियन भाषा कहा चली गई। ऐसे कैसे हो सकता है कि वे अब आर्य भाषा को जो कि हिन्दी की ही एक शाखा है, उसको बोलते हैं, जिसे खड़ी भाषा यानि हरियाणवी भी कहते हैं। ये हरियाणा के जाटों यानि हरियाणवी आर्यों की भाषा है। इसे वे सदियों से बोलते चले आए हैं। पेशावर से डेरा जाट और सुलेमान पर्वतमाला के पार कच्छ गोंडवाना में यह भाषा हिन्द की या जाट की भाषा के नाम से प्रसिद्ध है। शारीरिक बनावट व भाषा ऐसी चीज हैं कि उनको दरकिनार नहीं किया जा सकता। (जाट इति. पृ. 62 देशराज)

शरीर की बनावट व भाषा इन दो पहचानों से सभी जातियों का पता चल जाता है इसके इलावा धार्मिक भावना व रिती रिवाजों से भी हर जाति का पता चल जाता है कि यह किस नस्ल व देश की है। इस सिद्धान्त के अनुसार जाट आर्य नस्ल से ही संबंधित है। अतः धार्मिक भावनायें और रिती–रिवाज उन्हें वैदिक आर्यों का सच्चा उत्तराधिकारी सिद्ध करती है। यह निर्विवाद सही बात है कि "जाट विशुद्ध रूप से आर्य है"। जाट अपनी वीरता से सारे संसार में प्रसिद्ध रहे हैं क्योंकि प्रथम व द्वितीस विश्वयुद्ध में अंग्रेजों ने जाटों की वीरता को भली–भांति देखा व परखा था।

कारनामा राजपूत का लेखक श्री नजमुल रामपुरी लिखता है कि जाट जाति के अभ्यास, स्वभाव, रिति–रिवाज, रहन–सहन से पता चलता है कि वे सिन्ध नदी के पूर्व–पश्चिम में दोनों तरफ पाये जाते हैं। यदू/यादवों से ही उनका निकास सम्भव होता है। जाट जाति को कृष्णवंशी होने का गौरव प्राप्त है। इसी तरह सुख संपत्ति राय जी भंडारी ने अपने "भारत के देशी राज्य" नामक महाग्रन्थ में लिखा है कि "जाट आर्य वंश के है और प्राचीन काल में भारत में उनके निवासी होने के एतिहासिक प्रमाणिक उल्लेख भी मिलते हैं। यह भी पता चलता है कि जाट क्षत्रिय और उच्चकुलीन माने जाते थे क्योंकि जाट क्षत्रिय थे और क्षत्रियों को समाज में उच्च कुलीन माना जाता है और जाट आज भी उच्च कुलीन ही है क्योंकि जाटों को समाज में आज भी अन्नदाता कहा जाता है और अन्नदाता का समाज में 'प्राचीन वैदिक काल से ऊंचा दर्जा रहा है।'

आर्य लोग सामाजिक मामलों में अधिक उदार (श्रेष्ट) होने के कारण गत शताब्दीयों में पौराणिक मनोवादियों की आंखों में खटकने लगे और जाटों को तुच्छ घोषित कराने का प्रयास भी चलता रहा लेकिन यह कोशिश असफल ही रही। इसके अलावा अनेक अरबी इतिहासकारों ने भी कहा कि जाट ही भारत वर्ष के असल आर्य है क्योंकि ये इतिहासकार तो सारे भारत वर्ष को ही आर्य जाटों का देश मानते थे। इलियट साहब ने अपनी पुस्तक "हिस्ट्री ऑफ इण्डिया" अरब इतिहासकारों का हवाला देकर इसी बात को दोहराया है कि इसके अलावा डा. ट्रम्प, बीम्स, सर रिजले, सर जेम्स, ग्रियर्सन, भाई परमानन्द, यदुनाथ सरकार, प्रो. इन्द्र, स्वर्गीय राजा लक्ष्मण सिंह, कालिका रंजन कानूनगो योगेन्द्र पाल शास्त्री, कैप्टन दलीप सिंह अहलावत, ले. रामस्वरूप जून, यू. एन. शर्मा, डॉ. देशराज, पं. लेखराम आदि सुप्रसिद्ध इतिहासकारों और विद्धानों ने एक स्वर में कहा है कि जाट नस्ल से आर्य हैं। उपरोक्त उदाहरणों से यह भली भांति सिद्ध हो जाता है कि जाट न तो शको, न सिंथियनों और ना ही हुणों की सन्तान है। जाट विशुद्ध रूप से आर्य है। इतिहास इस बात का साक्षी हैं कि जब हुणों शको व सिंथियनों का कहीं नामों निशान भी नहीं था, जाट उस समय भी भारतवर्ष पर राज करते थे।

जाट इतिहास न लिखा जाने की कमी ने जाटों को उनके उच्च स्थानों से गिराने में बहुत सहायता दी है। मथूरा मेमायर्स के लेखक मि. ग्राउस ने जाटों को अपना इतिहास न लिखने पर बहुत फटकार लगाई। वास्तव में उनकी कोई एतिहासिक पुस्तक न पाकर दूसरे लोगों से जैसा उन्होंने सुना

था या बताया गया, वे लिखने को विवश हुए। यह सिद्ध करना कुछ भी कठिन नहीं है कि जाट इंडोआर्यन हैं जिन्हें किसी इतिहासकार व गजेटियर के संपादक ने इंडोसिंथियन लिख दिया क्योंकि वे जाटों के भारतीय इतिहास से अनभिज्ञ थे। 90 प्रतिशत इतिहासकारों ने मुक्त कंठ से जाटों को प्राचीन आर्यों के विशुद्ध वंशज बताया है। जाटों ने इस बात के विरूद्ध न तो आवाज उठाई कि कोई उनके विरूद्ध कौन कैसा प्रचार कर रहा है। न ही कोई प्रतिवाद किया। फिर भी निष्पक्ष विद्धान इतिहासकारों को यह स्पष्ट रूप से मानना पड़ा कि जाट आर्य हैं और प्राचीन आर्यों के वास्तविक उत्तराधिकारी हैं। जाट इतिहास पेज 67–68 डॉ. देशराज व लेखक भी इससे सहमत है।

डॉ. ट्रिम्प कहते हैं कि "सिन्ध की आदि निवासी जाति जाट है।" इसमें कोई संशय नहीं हैं कि ये जाट इस देश के निवासी दिखलाई देते हैं, वे विशुद्ध आर्य वंश से ही हैं"।

श्री कुद्रयात्सेन का मत है कि जनगणना की सूचना, दूसरे सरकारी पत्र प्रमाण, नृव्यविद्या की जांच (इबस्टन, क्रुक, रोज, वर्तमान ग्रन्थकार) परम्परा से जाटों को एक अलग कुल या कुलों – वंशों का संघ (गण) मानते है"। कुछ लेखकों का कहना है कि भारत पर सिंथियनों के आक्रमण से काफी समय पहले जाट लोग सिंध प्रान्त में आबाद थे और उनका संबंध महाभारत के युद्धों और योद्धाओं से था।

जहां भी रक्षा का प्रश्न उठता है, बलिदान की आवश्यकता होती हैं वहां इन जाट वीरों को सबसे पहले याद किया जाता है। महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी ने जाटों की गौरवपूर्ण बल शक्ति पर भारतीयों का ध्यान आकर्षित करते हुए अपने भाषण में कहा था कि "जाट भारतीय राष्ट्र की रीढ़ है। भारत को इस साहसी वीर जाति से बहुत बड़ी आशाएं हैं"।

अरब यात्री अनुलारिह मुहम्मद बिन अहमद अलबुरूनी ने "तहकीकए हिन्द" में भगवान श्री कृष्ण को जाट लिखा है। स्पष्ट है जाट, संघ क नाम से जाट, किन्तु जाति के नाम से आर्य हैं।

जाटस दी एनशियन्ट रूलरज लेखक डॉ. भीम सिंह दहिया ने पृ. 81 पर भविष्य–पुराण का हवाला देकर लिखा है कि "जाट आर्य है" आगे डॉ. दहिया साहब ने पृ. 97–98 पर जाटों के बारे में लिखा है कि "प्रसिद्ध इतिहासकारों के शब्दों में वर्तमान समय के जाट, शारीरिक बनावट, भाषा, चरित्र, बुद्धि शासन की योग्यता तथा सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से निसन्देह प्राचीन वैदिक आर्यों के उच्चतर प्रतिनिधि हैं। बनिस्बत (तुलना में) हिन्दू जाति के उन तीन ऊंचे कुल के किसी भी सदस्य से, जिन्होंने अवश्य ही अपना मौलिक चरित्र बहुत कुछ खो दिया है"।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जाटों को विशुद्ध रूप से आर्य माना है। स्वामी जी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश एकादश पृ. 227–28 पर जाट जी और पोप जी की एक घटना का उदाहरण देकर जाट जी का बड़ा सम्मान किया है। क्योंकि पोप जी की पोपलीला का जाट द्वारा भण्डाफोड़ किया गया था, तो स्वामी जी ने जाट को बड़ा सम्मान दिया था। स्वामी जी पोप लिला के बहुत ही खिलाफ थे। उन्होंने पोप लिला के खिलाफ काफी प्रचार किया था जिससे सामाजिक कुरितियों को काफी हद तक कम करने का स्वामी जी को बल मिला था।

जाट धर्म, भाषा, संस्कृति सभ्यता, शासन पद्धति के आधार पर पूर्ण रूप से वैदिक धर्मी आर्य हैं। एक ईश्वर में विश्वास, गुण कर्म स्वभाव आधार पर छोटा बड़ा समझना, जगत जननी स्त्री जाति का पूर्ण सम्मान करना, प्रान्तीय भेदभाव से दूर रहना, विद्धानों का सम्मान करना, युद्ध व कृषि के लिए अपना सबकुछ न्यौछावर करना, इसको संक्षेप में "सम्मान के साथ जीना और सम्मान के साथ मरना" जाटों की विशेषताएं रही है जो कि ये सभी विशेषताएं आर्यों में ही पाई जाती हैं। जाट–समाज–धर्म सुधार में सबसे आगे रहते हैं। इनकी समाज, मानव–समाज सेवा के गुणों के कारण ही इन्हें भिन्न–भिन्न स्थानों पर चौधरी, ठाकुर पटेल, सरदार प्रधान, मिर्घा, फौजदार, मलिक/मालिक आदिनामों से सम्मान के साथ सम्बोधित किया जाता है। ये उपलब्धियां जाटों का क्षत्रिय होना भी सिद्ध करती हैं।

जाट एक ईश्वर को ही मानते हैं। वेदों के आधार पर ईश्वर के एक होने के लिए सम्पूर्ण आर्य साहित्य ने बल दिया है। महात्मा बुद्ध ने जब ढकोसलों और पाखण्डों के विरूद्ध समाज में घोषणा की तो सभी जाट संघों ने बौध धर्म अपना लिया था और जितने भी प्राचीन काल में शक्तिशाली सम्राट हुए, जैसे चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक महान, सम्राट विक्रमादित्य, सम्राट कनिष्क, समुन्द्रगुप्त, चन्द्रगुप्त(2), हर्षवर्धन, सम्राट अनंगपाल तोमर आदि सभी जाट शासकों ने बौध धर्म अपना लिया था क्योंकि महात्मा बुद्ध भी स्वयं जाट थे। जब अरब के मरूस्थल में उठते हुए "लाइलाह इलिल्लाह खुदा एक ही है" के नारे को पश्चिमी भारत के सीमान्त प्रदेश की एक ईश्वर विश्वासी जाट जनता ने सुना तो उधर सामुहिक रूप से मुसलमान होकर एक खुदा की इबादत करने लगे। शंकराचार्य और कुमारिल भट्ट आदि के प्रयत्नों से जब नवीन हिन्दु धर्म की स्थापना की गई तब जाट उन पौराणिको की ओर आकर्षित न होकर उनके फंदें में न फंसे। उनके विचारों में एक ईश्वरवाद के विपरित अस्थिरता आना ही चाहती थी कि ऋषिवर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपना दिव्य सन्देश सुनाकर उन्हें शुद्ध वैदिक मत का मार्ग दिखाया।

कभी–कभी व्यक्ति धागे ही इतने कमजोर चुन लेता है कि पूरी उम्र ही गांठ बांधने में गुजर जाती है

हिन्दु जाटों ने उनके उपदेशों के सामने आत्म समर्पण कर दिया। आज परिणाम यह है कि हिन्दू कहलाने वाले सम्पूर्ण जाट वैदिक मतानुयायी आर्य समाजी हैं। वैसे तो आज के समाज में काफी कुरितियों के कारण आर्य समाज दम तोड़ने के कगार पर खड़ा है, क्योंकि जाटों में ही आर्य समाज का भाव देखा गया हैं क्योंकि जाट ही सच्चे मायनों में वैदिक आर्यों की सन्तान हैं। इसी प्रकार गुरू नानक जी ने भी जब सिक्ख सम्प्रदाय की नीवं डाली तो पंजाब के जाटों ने ही सर्वथा सामुहिक रूप से सिक्ख धर्म को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार से समस्त भारत के जाट वैदिक धर्मी रूप में एक ही ईश्वर को मानते थे और उसी का ध्यान करते थे। जो जाटों की अपनी निराली विशेषता है।

गुण कर्मानुसार छोटा बड़ा मानना – आर्य संस्कृति की प्रबल पोषक वर्ण व्यस्था का खात्मा होने पर वंशों की ऊंच–नीच की इतनी प्रबलता हुई कि वर्ण से नीचे जाति–जाति में पारस्परिक घृणा के भाव घर कर गए। आखिरकार यह हुआ कि राम के वंशज, कृष्ण के वंशज दूसरो को तुच्छ मानने लगे और समाज में यह जहर फैलता ही चला गया। उनकी ऊंच–नीच का यह परिणाम है कि प्रयत्न किए जाने पर भी आज तक कभी भी ब्राह्मणों का कोई संगठन सम्पन्न नहीं हुआ। अहिरों में नंदवंशी और यादव, गुजरों में बडगुजर, मराठों में भौंसले आदि सभी अपने आपको श्रेष्ठ मानने लगे। जाटों में सबसे अधिक लगभग 5000 गोत्र हैं। जो कि वैदिक आर्यों की ही परम्परा रही है।

स्त्रियों को समान अधिकार भी प्राचीन समय से ही जाटों में ही दिए जाते है जो कि वैदिक आर्यों की ही परम्परा रही है। दूसरी जातियों में तो विधवा को अभिषाप माना जाता था लेकिन जाटों में ऐसा नहीं है वैदिक काल से ही विधवा का विवाह दूसरे भाईयों से करवा दिया जाता था, यह प्रथा वैदिक काल से ही आर्यों की प्रथा रही है। यदि किसी अन्य जाति की लड़की का विवाह जाटों में होता है तो उसे वही जाटनी वाला सम्मान मिलता है क्योंकि जाटों की एक कहावत है कि जाट के घर आई और जाटनी कहलाई।

लोकश्रुति के अनुसार जाट जाति अपने जैसे ही वीर पुत्रों को जन्म देती हैं। इस प्रकार के सभी सम्मान से जाट जाति क्षत्रियों में वह पारसमयी है जो लोहे को सोना बनाने की क्षमता रखती है। जाटों ने घर, बाहर सभी क्षेत्रों में स्त्रियों को समानता प्रदान की हुई है। अपने भाई की विधवा से विवाह करना जाटों की प्रथा वैदिक शास्त्रों के भी अनुकूल है जो कि जाटों का आर्य होने का मजबूत प्रमाण दर्शाता है। चौथी शताब्दी में सम्राट चन्द्रगुप्त(2) ने अपने भाई समुन्द्रगुप्त की विधवा से ही विवाह कर लिया था। वे धारण गोत्र के जाट थे। गुप्तकाल के सभी शासक धारण गोत्र के जाट शासक थे। इनके समय में भारतवर्ष को संसार में सोने की चिड़ियां कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ था। इनकी राजधानी मगध थी। 1300 ई. में मालदेव राठौर ने अपनी विधवा बेटी की शादी राणा हमीर देव मेवाड़ शासक से कर दी थी। आजकल हिन्दुओं की अन्य जातियों ने भी जाटों के देखा–देखी विधवा विवाह करवाना शुरू कर दिया।

प्राचीन आर्य मांस नहीं खाते थे और जाटों में भी मांस न खाने की परम्परा अब तक आ रही है। समय के फेर में अब हिन्दूओं में बहुत सी जातियों में मास खाने लग गए हैं। लेकिन जाटों में आज भी बहुत ही कम लोग मांस खाते है क्योंकि ये प्राचीन आर्यों की ही संतान है।

भेदभाव से परे रहना। बौध काल के पश्चात नवीन हिन्दु धर्म के समय हिन्दुओं की सभी जातियों में ऊँच–नीच का भेदभाव प्रबल रूप से पैदा हो गया। प्राचीन भारत की सभी विशेषताओं की सच्ची स्मारक जाट जाति में आज भी अखिल भारतीय अटूट संबंध बना हुआ है। केवल जाट कह देने से ही सारे भारतवर्ष में बिना भेदभाव के खानपान और रोटी बेटी का संबंध आज भी विद्यमान हैं सामाजिक संगठन के प्रेमभाव से सभी स्थानों के हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सभी जाट आपस में एक है। वंशागत, ऊँच–नीच से दूर यदि कोई संगठन में आदर जाती है, तो वह केवल जाट ही है जोकि केवल वैदिक आर्यों के ही गुण रखने वाली जाति है।

जाटों का शारीरिक गठन, धर्म, समाज, विवाह, पंचायत और भाषा के विषय में सभी प्रकार से जाटों और आर्यों में कोई भेद नहीं हैं क्योंकि जाट ही वैदिक आर्यों की संतान हैं। विवाह शादी करते समय जाटों में अपना, मां का, दादी व मौसी, पिता की दूसरी व्याहता आदि का गोत्र छोड़ते हैं। यह विशेषता जाटों के आर्य नस्ल होने का दृढ़ प्रमाण है। जाटों के इलावा दूसरी जातियों में यह प्रथा नाममात्र ही है। इसके इलावा कई गोत्रों में भाईचारा होने पर भी आपस में विवाह शादी के समय गोत्र छोड़ते है जैसे दलाल, देसवाल, मान, सिहाग, अहलावत, ओहलाण, पेहलाण, दुहन और मलिक का भी भाईचारा है। जाट तो अपने गांव की सीमा के साथ लगते गांव में शादी नहीं करते क्योंकि ये गांव तो भाईचारे में ही आ जाते हैं। कई हिन्दु जातियाँ केवल अपना ही गोत्र छोड़ती हैं।

उपरोक्त सभी उदाहरणों से स्वतः ही ज्ञात हो जाता है कि केवल जाट ही तो आर्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जब दोबारा आर्य समाज का प्रचार किया तो उनके साथ इस कार्य में केवल जाटों ने ही कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य किया। प्राचीन वैदिक काल से आज तक जाटों ने ही आर्य विचारों की पालना की है अतः जाट ही सच्चे आर्य है। इनके इलावा और किसी जाति धर्म में जाटों से बड़ा आर्य कोई भी नहीं हो सकता।

डिग्रियां तो शिक्षा में हुए खर्च की रसीदें हैं। ज्ञान तो वह है जो किरदार में झलकता है।

रोहतक के जाटों ने अंग्रेजों को धूल चटायी

– बी.एस. गिल,
जाट सभा (मो० 9888004417)

1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के समय रोहतक एक छोटा सा किंतु अति महत्वपूर्ण नगर था। यह बंगाल के गर्वनर के अधीन था। कमिश्नरी का मुख्यालय आगरा था और यहां डिप्टी कमिश्नर जोन एडमलौच तैनात था।

बड़ी संख्या में रोहतक के नौजवान सेना में थे। इनमें जाटों और राघड़ों की संख्या सबसे अधिक थी। ये दोनों जातियां अंग्रेज अधिकारियों से असंतुष्ट थीं।

रोहतक के जवानों को जब मेरठ के सैनिक विद्रोह का समाचार मिला, तो वे छुट्टी लेकर घर आये और उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध असंतोष फैलाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। अंग्रेजों को इस बात का पता चला, तो बंगाल सिविल सर्विस के अधिकारी जॉन एडम लोच ने इन जवानों की छुट्टी कैंसिल कर दी और झज्जर के नवाब को रोहतक सेना भेजकर रोहतक में आतंक फैलाने का आदेश दिया।

नवाब झज्जर ने दो तोपों के साथ एक सैन्य टुकड़ी को रोहतक विद्रोह दवाने भेजा। किंतु यह टुकड़ी स्वयं क्रांतिकारियों के साथ मिलकर क्रांति में शामिल हो गयी।

बादशाह बहादुरशाह जफर ने क्रांति के आरम्भ में हरियाणा सर्वखाप पंचायत को सहायता के लिए एक पत्र लिखा। सर्वखाप पंचायत के सरदारों ने तब रोहतक में एक बड़ी पंचायत की और पंचायत में इस पत्र पर विचार किया गया। पंचायत ने सर्वसम्मति से बादशाह को हर प्रकार की सहायता देने पर सहमति प्रकट की गयी। इसके बाद सर्वखाप पंचायत की सभा सौरम और फिर बड़ौत में भी आयोजित की गयी। दोनों पंचायतों में बादशाह को हर प्रकार की सहायता देने पर सहमति प्रकट की गयी। वहां की दोनों सभाओं की सूचना रोहतक भेज दी गयी। रोहतक निवासियों ने क्रांति का बीड़ा उठा लिया। जंग शुरू हो गयी।

राजा नाहर सिंह के सुझाव पर बादशाह ने 24 मई को तफज्जुल हुसैन की अगुवाई में एक बड़ी सैन्य टुकड़ी रोहतक में क्रांतिकारियों की सहायता के लिए भेजी। रोहतक के नागरिकों ने इस टुकड़ी का पूरे जोशो खरोश के साथ स्वागत किया। पूरे रोहतक में जैसे हर्ष की लहर दौड़ गयी थी। रोहतक के चारों ओर के जाट बाहुल्य क्षेत्र ने इस सेना का दिल खोलकर स्वागत किया। यही नहीं क्षेत्र के अधिकांश जाट भी इस टुकड़ी के साथ लड़ने के लिए तत्पर हो गये।

शाही सेना और क्रांतिकारियों के आने का समाचार पाकर रोहतक में मौजूद अंग्रेज अधिकारी भागने लगे। इन भागते अंग्रेज अधिकारियों को क्रांतिकारियों ने मारना शुरू कर दिया। डिप्टी कमिश्नर जोन एडमलौक किसी तरह बचकर गोहाना के रास्ते करनाल भाग गया।

क्रांतिकारी सेना और रोहतक वासियों ने अधिकांश अंग्रेजों को मार डाला। क्रांतिकारियों ने जेल को तोड़कर वहां से सारे कैदियों को आजाद करा दिया। इसके साथ उन्होंने कचहरी को आग के हवाले कर कचहरी के सारे रिकार्ड को जला दिया और खजाने को लूट लिया। क्रांतिकारियों को खजाने की लूट से दो लाख रुपये प्राप्त हुए। पूरे नगर से अंग्रेजों का कब्जा छिन जाने के बाद शहर क्रांतिकारियों के हवाले हो गया।

मुसलमान राजपूत (रांघड़) भी इस धर्म युद्ध में बराबर शरीक थे। किंतु कुछ रांघड़ युवकों ने नगर को लूटने की योजना ही बना ली। कुछ रांघड़ युवक नगर को लूटने में जुट भी गये। किंतु जाटों ने उनकी योजना को नाकाम कर दिया। जहां भी कोई रांघड़ जाटों को लूटपाट में लिप्त मिलता, वे उसे पकड़कर ऐसी सजा देते कि वह सारी लूटपाट भूल जाता। जाटों ने पूरे नगर में जाट नौजवानों के जत्थे नियुक्त कर दिये, जिससे कि रांघड़ नगर को लूटने में कामयाब न होने पाएं।

इस मसले को लेकर जाटों और राघड़ों में जबर्दस्त आपसी मनमुटाव हो गया। एक बार तो आपस में ही वर्ग संघर्ष जैसे हालात हो गये थे। अधिकांश अंग्रेज मार डाले गये। ऐसे में अंग्रेजों की स्त्रियां निसहाय रह गयीं। रांघड़ उन असहाय अंग्रेज स्त्रियों की इज्जत लूटने और उनका अपहरण कर अपने साथ ले जाने की का प्रयास करने लगे।

जाटों ने यह देखा, तो यह उन्हें सहन नहीं हुआ। वे अपने परम्परागत गुण के कारण अंग्रेज औरतों की रक्षा के लिए राघडों के सामने जा डटे। रांघड़ों ने जब जाटों को अपनी राह का रोडा बनते देखा, तो वे जाटों से भिड़ गये। जाटों ने अपनी भरसक शक्ति से रांघड़ों का डटकर सामना किया और अंग्रेज औरतों और उनके बच्चों की रक्षा की। जाटों ने रांघड़ों को मार मारकर रोहतक से भगा दिया। इस प्रकार अंग्रेज स्त्रियों की रांघड़ों से रक्षा हो पायी। जाटों ने इन सभी स्त्रियों को अपनी अभिरक्षा में अंग्रेजों के पास सुरक्षित पहुंचाया। जाटों ने क्रांतिकारियों के साथ मिलकर मांडौठी, महम व मदीना की पुलिस चौकियां फूंक डाली। जाटों के एक बड़े गोत गठवाला (मलिक) ने गोहाना कस्बे से अंग्रेजों को भगाकर उस पर अपना अधिकार कर लिया।

जो प्रभु के चरणों में शांति ढूंढ ले उसे दुनिया का शोर परेशान नहीं कर सकता।

डिप्टी कमिश्नर जोन एडमलौक रोहतक को क्रांतिकारियों के कब्जे से मुक्त कराने के लिए सैन्य सहायता एकत्र करने का प्रयास कर रहा था। वह सैनिक सहायता प्राप्त करने के लिए अम्बाला पहुंच गया। उसे जब वाच्छित सैन्य सहायता उपलब्ध हो गयी, तो वह 30 मई को सेना सहित अम्बाला से रोहतक के लिए रवाना हुआ। रास्ते में जगह–जगह जाटों ने उसकी सेना का भरसक विरोध किया और उसकी सेना को भारी क्षति पहुंचायी।

श्यामड़ी के जंगलों में तो अंग्रेजी सेना से जाटों ने डटकर मुकाबला किया। जाटों के पास हालांकि कोई अस्त्र–शस्त्र नहीं थे, वे केवल अपने साहस के बल पर परम्परागत हथियारों जेली, बल्लम और कुल्हाड़ों के साथ अंग्रेजी सेना से भिड़ गये थे। इसके उपरांत भी श्यामड़ी के साहसी जाट इस जंग में विजयी रहे। उन्होंने अत्याधुनिक शस्त्रों से सुसज्जित अंग्रेजी सेना को मारकर भगा दिया।

हालांकि इस जंग में जाटों को विजयश्री प्राप्त हुई थी, किंतु उन्होंने इसकी बहुत बड़ी कीमत भी अदा की थी। उनके 250 जाट वीर शहीद हुए थे। किंतु जाट इस जनहानि से विचलित नहीं हुए थे। विश्वविख्यात और सारे विश्व पर एकड़ राज्य करने वाली अंग्रेज जाति का जाटों ने बिना किसी सैन्य संगठन और बिना हथियारों के ही विजयश्री प्राप्त की थी। इस विजय से जाटों के साहस में दोगुना इजाफा हुआ। जाटों ने अंग्रेजी सेना के 400 से अधिक जवान इस जंग में मौत के घाट उतारे थे। जोन एडमलौक अपनी बची सेना के साथ जान बचाकर भाग गया। वह जंगलों और खेतों में छिपते छिपाते किसी तरह 10 जून को सांपला पहुंचा। उसका इरादा सांपला से रोहतक की ओर जाने का था। किंतु तेज लू के कारण जोन एडमलौक इतना परेशान हुआ कि वह अंधा ही हो गया। अब उसमें रोहतक की ओर बढ़ने की हिम्मत नहीं बची थी।

रोहतक के जाट क्रांतिकारियों की गतिविधियां केवल रोहतक तक ही सीमित नहीं थीं। वे रोहतक को अपने अधिकार में कर लेने के बाद आसपास जहां कहीं भी क्रांतिकारियों को उनकी सहायता की आवश्यकता होती, समाचार मिलते ही दौड़ पड़ते। उन्होंने महम, हांसी, सांपला, बहादुरगढ़ और हिसार तक जाकर कांतिकारियों की सहायता की और अंग्रेजों का मान मर्दन किया। रोहतक के जाटों ने अंग्रेजों को दिखा दिया कि विजेता कौन है। इसी बीच रोहतक के क्रांतिकारियों को समाचार मिला कि अंग्रेजी सेनाएं दिल्ली पर पुनः अधिकार करने के लिए राजपूतों और सिखों की भारी सेना के साथ दिल्ली पर आक्रमण करने वाली हैं. तो वे जैसे आजादी के दीवाने ही हो गये और हजारों की संख्या में बादशाह की सेना की सहायता करने के लिए 14 जून को दिल्ली के लिए रवाना हो गये।

एडमलौक जब स्वस्थ हुआ तो उसने रोहतक पर आक्रमण कर दिया। किंतु रोहतक के जाटों ने एडमलौक की सेना का डटकर मुकाबला किया और उसकी सेना को मार–मारकर भगा दिया। एडमलौक ने तब रोहतक को जींद के महाराजा स्वरूप सिंह से रोहतक को विजय करने में सहायता की गुहार की। महाराजा स्वरूप सिंह ने रोहतक को जीतने की जिम्मेदारी ले ली। एडमलौक ने तब 26 जुलाई को रोहतक को स्वरूप सिंह के हवाले कर दिया।

जींद की सेनाओं ने रोहतक पर हमला कर दिया। जाटों ने इस सेना का पूरी शक्ति के साथ सामना किया। किंतु उसी समय जाटों के सम्मुख एक अजब मुसीबत आ खड़ी हुई। जिन रांघड़ों से जाटों ने अंग्रेज स्त्रियों की रक्षा की थी, वे अब खुलकर जाटों पर हमले करने लगे थे। रांघड़ अंग्रेजी सेना से युद्ध करने के स्थान पर अब जाटों से ही अपनी दुश्मनी निभाने और उन पर ही हमले करने में लगे थे। इस प्रकार जाटों को अब एक साथ दो–दो मोर्चे संभालने पड़ रहे थे। एक दुश्मन उनके सामने था, तो दूसरा बगल में छुरा लिये घूम रहा था, जिसकी वे पहचान भी नहीं कर सकते थे।

लेकिन जाट दोनों मोर्चों पर शान से लड़ते रहे। उन्होंने एक ओर तो अंग्रेजों के सहायक जींद के राजा की सेना से डटकर लोहा लिया, तो दूसरी ओर उन्होंने रांघड़ों को भी मार–मारकर रोहतक से भगाया।

एडमलौक ने जब देखा कि जाट क्रांतिकारी लगातार उसकी विजय की राह में रोड़ा बने हुए हैं, तो उसने अपनी सहायता के लिए कप्तान हडसन को रोहतक बुलाया।

इससे पूर्व हडसन ने दिल्ली से फिरोजपुर जा रही एक विशेष रेलगाड़ी से फिरोजपुर जा रहे सरकारी खजाने की रक्षा करते हुए, खरखौदा में बिसारत अली के नेतृत्व में खजाना लूटने आये 25 क्रांतिकारियों को मौत के घाट उतार दिया था। हडसन अपनी इस सफलता पर बहुत ही अधिक गर्व अनुभव कर रहा था।

सफलता के नशे में चूर हडसन अंग्रेजी सेना लेकर 16 अगस्त 1857 को क्रांति का शमन करने रोहतक पहुंचा। हडसन की सेना में 6 अफसर, 103 सहायक अफसर, 233 घुड़सवार सैनिक तथा जींद राज्य के 25 सशस्त्र सैनिक थे। यह सेना सभी प्रकार के शस्त्रों से पूरी तरह से सुसज्जित थी, जबकि जाट क्रांतिकारियों के पास केवल चार बंदूकें थीं। शेष के हाथों में उनके परम्परागत हथियार ही थे।

हडसन ने अपने आतंक का सिक्का जमाने के लिए रोहतक में घुसते ही एक स्थान पर कुछ आदमियों को एकत्र देख, उन पर गोली चलवा दी। इस गोलीकाण्ड में 16 व्यक्ति मारे गये। हडसन अपनी सेना लेकर रोहतक नगर में घुस

गया। उसे जो भी व्यक्ति सामने दिखाई देता, वह उसे ही गोली से उड़वाता चला गया। रोहतक में हडसन का आतंक छा गया।

रोहतक के निकटवर्ती गांवों में हडसन की सेना के आतंक का समाचार जंगल की आग के समान फैल गया। सिंघपुरा, सुन्दरपुर, टिटोली आदि गांवों के जाटों को जब हडसन के आने और उसके द्वारा रोहतक में मारकाट मचाने का समाचार मिला, तो इन गांवों का प्रत्येक युवा, अधेड़ और वृद्ध हडसन की सेना का सामना करने के लिए रोहतक की ओर दौड़ पड़े।

लोगों को पता चल चुका था कि यह वही हडसन था, जिसने बादशाह बहादुरशाह को गिरतार किया था और बादशाह के बेटों–पोतों के सिर काटकर बादशाह के सम्मुख रख दिये थे। लोग हडसन को सबक सिखाने के लिए इतने व्याकुल थे कि देखते ही देखते 1500 जाटों की एक शक्तिशाली क्रांतिकारी एकत्र हो गये और उन्होंने रात के समय हडसन की सेना पर जोरदार आक्रमण कर दिया।

क्रांतिकारियों ने इस जंग में हडसन और हडसन ने जब जाटों का विकट शौर्य देखा, तो वह अपनी बची हुई सेना लेकर सिर पर पैर रखकर भाग निकला और उसने किसी तरह अपनी जान बचायी। जाट क्रांतिकारियों ने काफी दूर तक हडसन का पीछा किया, किंतु वह किसी तरह से अपनी जान बचाकर भाग निकलने में कामयाब हो गया।

पूरे रोहतक जिले पर क्रांतिकारियों का कब्जा हो चुका था। जिले की पंचायतों और खापों ने प्रशासन पर अधिकार कर स्वशासन लागू कर दिया था। खापों ने स्वशासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए सैनिक दस्तों का गठन कर लिया था, जो किसी भी हमले से जूझने के लिए तत्पर थे। इन गांवों ने विद्रोह की विफलता के बाद भी अंग्रेजों को कई माह तक भी इस क्षेत्र पर अधिकार नहीं करने दिया था।

ब्रिगेडियर होशियार सिंह राठी - साहस, कर्तव्य और सर्वोच्च बलिदान की अमर गाथा

– लक्ष्मण सिंह फौगाट, (मो० 6280830760)

भारत के सैन्य इतिहास में अनेक ऐसे वीर सपूत हुए हैं, जिन्होंने देश की सीमाओं की रक्षा करते हुए अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान दिया। ब्रिगेडियर होशियार सिंह राठी (1916द्1962) ऐसे ही अदम्य साहस और कर्तव्यनिष्ठा के प्रतीक थे, जिन्होंने 1962 के भारत–चीन युद्ध के दौरान सेला दर्रे की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त की।

हरियाणा के वर्तमान झज्जर जिले में बहादुरगढ़ के निकट स्थित सांखोल गांव में जन्मे ब्रिगेडियर होशियार सिंह राठी का जीवन अनुशासन, नेतृत्व और राष्ट्रसेवा की भावना से ओत–प्रोत था। भारतीय सेना में उन्होंने विभिन्न महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाईं और अपने सैन्य जीवन में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए OBE, Croix de Guerre, Indian Order of Merit तथा Vishisht Seva Medal जैसे सम्मान प्राप्त किए।

वर्ष 1962 में भारत–चीन युद्ध के दौरान ब्रिगेडियर होशियार सिंह राठी 62वीं भारतीय इन्फैंट्री ब्रिगेड के कमांडर थे। उनकी ब्रिगेड को अरुणाचल प्रदेश के दुर्गम और रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण सेला दर्रे की रक्षा का दायित्व सौंपा गया था।

उनके नेतृत्व में विभिन्न सैन्य इकाइयों के सैनिकों ने कठिन भौगोलिक परिस्थितियों, अत्यधिक ठंड और युद्ध की विषम परिस्थितियों के बीच मोर्चा संभाला। उनकी ब्रिगेड में 1 सिख, 2 सिख लाइट इन्फैंट्री, 4 सिख लाइट इन्फैंट्री तथा गढ़वाल राइफल्स के सैनिक शामिल थे।

सेला दर्रा केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं था, बल्कि उस समय उत्तर–पूर्वी सीमा की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सामरिक क्षेत्र था। ऐसे कठिन मोर्चे पर ब्रिगेडियर होशियार सिंह ने अपने सैनिकों का नेतृत्व स्वयं अग्रिम पंक्ति में रहकर किया।

1962 के युद्ध के कठिन दौर में ब्रिगेडियर होशियार सिंह राठी अपने सैनिकों के साथ डटे रहे। युद्धविराम के दो दिन बाद, 23 नवंबर 1962 को फुडुंग के निकट उनके दल पर चीनी सैनिकों ने घात लगाकर हमला किया। इस संघर्ष में ब्रिगेडियर होशियार सिंह सहित कई भारतीय सैनिक और अधिकारी वीरगति को प्राप्त हुए, जबकि अनेक सैनिक घायल अथवा बंदी बनाए गए।

उनका पार्थिव शरीर स्थानीय मोनपा समुदाय के लोगों ने सुरक्षित रखा। बाद में भारतीय सेना के अधिकारी वहां पहुंचे और उनके पार्थिव शरीर का सैन्य सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। उनके ज्येष्ठ पुत्र ने अंतिम संस्कार की रस्में पूरी कीं।

शिकवे तो सभी को है जिंदगी से साहब, पर जो जीना जानते हैं वह शिकायत नहीं करते।

यह घटना केवल एक सैनिक की मृत्यु नहीं थीय यह उस नेतृत्व की गाथा थी जिसमें एक सेनानायक ने अपने सैनिकों के साथ अंतिम क्षण तक खड़े रहकर अपने कर्तव्य का निर्वहन किया।

ब्रिगेडियर होशियार सिंह के बलिदान ने पूरे देश को शोकाकुल कर दिया। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरों तथा वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों ने उनके पैतृक गांव सांखोल पहुंचकर उनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की।

उनकी पहली पुण्यतिथि पर श्रीमती इंदिरा गांधी भी उनके परिवार से मिलने सांखोल पहुंचीं। यह उस समय उनके बलिदान के प्रति राष्ट्र की गहरी श्रद्धा और सम्मान का प्रतीक था।

ब्रिगेडियर होशियार सिंह राठी का बलिदान आज भी अरुणाचल प्रदेश की धरती पर स्मरण किया जाता है। तवांग युद्ध स्मारक और न्युकमाडोंग युद्ध स्मारक 1962 के युद्ध में शहीद हुए सैनिकों की वीरता और बलिदान को नमन करते हैं। न्युकमाडोंग स्थित स्मारक विशेष रूप से 62वीं भारतीय इन्फैंट्री ब्रिगेड के शहीदों की स्मृति से जुड़ा है।

हरियाणा में भी उनकी स्मृति को सम्मान दिया गया है। बहादुरगढ़ में दिल्ली मेट्रो के एक स्टेशन का नाम ब्रिगेडियर होशियार सिंह स्टेशन रखा गया है। इसके अतिरिक्ति महावीर पार्क में उनकी प्रतिमा स्थापित है। दिल्ली में उनके नाम पर ब्रिगेडियर होशियार सिंह मार्ग भी है। उत्तर प्रदेश के शामली में ब्रिगेडियर होशियार सिंह इंटर कॉलेज उनके नाम से जाना जाता है।

ब्रिगेडियर होशियार सिंह राठी का उल्लेख करते समय यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि वे कर्नल होशियार सिंह दहिया से अलग थे। कर्नल होशियार सिंह दहिया (1937–1998), 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध में बसंतर की लड़ाई में असाधारण वीरता के लिए परमवीर चक्र से सम्मानित किए गए थे। दोनों वीर सैनिक हरियाणा की धरती से थे, लेकिन वे अलग–अलग समय में भारतीय सेना में सेवा देने वाले दो अलग महान योद्धा थे।

ब्रिगेडियर होशियार सिंह राठी की जीवनगाथा हमें बताती है कि सैनिक का सबसे बड़ा धर्म उसका कर्तव्य है। विपरीत परिस्थितियां, कठिन भूगोल और युद्ध की चुनौती भी उस संकल्प को नहीं डिगा सकीं, जिसके साथ उन्होंने देश की रक्षा की जिम्मेदारी संभाली थी।

उनका जीवन और बलिदान आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा है। सांखोल की धरती से लेकर सेला दर्रे की बर्फीली चोटियों तक उनकी वीरता की कहानी भारतीय सैन्य इतिहास का गौरवपूर्ण अध्याय है।

राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा करते हुए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले इस अमर सेनानी को शत्–शत् नमन।

इंडिया बनाम भारत

– सूरजभान दहिया (मो० 9818120950)

'इंडिया बनाम भारत' की बात चौधरी चरण सिंह ने शुरू की थी। किसान नेता शरद जोशी ने इसे लोगों को सोचने के लिए मजबूर किया था। यह सच है कि किसानों को .षि उत्पाद का उचित और समयानुकूल मूल्य नहीं मिलता। भारतीय चर्चाओं और विवादों का एक बड़ा भाग गाँव और उनकी समस्याओं पर केंद्रित है। इस प्रक्रिया में हम गाँव और शहर को दो विपरीत ध्रवों की तरह देखते हैं और उनकी रूढ़िबद्ध छवियों के आधार पर उनकी समस्याओं को प्रस्तुत करते हैं।

विवाद के प्रमुख मुद्दे हैं, नगरों द्वारा गाँव का शोषण, राष्ट्रीय निवेश का नगरों पर विषम अनुपाती व्यय, कृषि की उपेक्षा और उद्योगों का बहाना, राजनीतिक प्रक्रियाओं में नगरों का वर्चस्व आदि। काफी हद तक इन बातों में सच्चाई भी है।

पं० जवाहरलाल नेहरू ने 1945 में गांधी जी को लिखा था कि गाँव सामान्य दृष्टि से बौद्धिक और सामाजिक क्षेत्रों में पिछड़े हुए हैं और इस वातावरण में उनकी प्रगति नहीं हो सकती।

नेहरू की उपरोक्त टिप्पणी को किए हुए 80 वर्ष से अधिक हो गए हैं। आइए, गाँवों की उन गलियों में चलें, जहाँ जीवन सुधर रहा है या बिगड़ रहा है। मुझे तो गाँव आज प्राचीन सभ्यता के अवशेष जैसे लगते हैं.न स्कूलों की शिक्षा सुधरी, न स्वास्थ्य सेवाएँ पर्याप्त हुईं और न ही जनसाधारण में जीने की उमंग दिखाई देती है।

मैंने पिछली सदी के साठ के दशक में एक कविता पढ़ी थी:–

"अहा! ग्राम्य जीवन भी क्या है, क्यों न इसे सबका मन चाहे।"

पर आज इसकी अनुभूति बिल्कुल नहीं हो रही।

राजनीति में मौसम चलता रहता है। समय–समय पर किसानों और गाँवों की चर्चा होती रहती है। चौधरी देवीलाल ने भी गाँव बनाम शहर के मुद्दे को ज्वलंत करके ग्रामीण

परिवेश को बदलने का बीड़ा उठाया था और जीवन–पर्यंत इसके लिए संघर्षशील रहे। परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बुनियादी सुविधाओं का अभाव दिखाई देता है।

मैं इस स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आज भी एक गाँव में जाकर कुछ बड़े बुजुर्ग किसानों से मिला और उनसे पूछा, "राजनीति में तुम्हारी बड़ी ताकत है। बड़े–बड़े दिग्गजों का भविष्य तुम्हारे नाम से दाँव पर लगा रहता है, फिर गाँव क्यों नहीं बदले?"

उनका कहना था कि राजनीति अजूबा खेल है। कहने को भारत सदियों से कृषि प्रधान देश रहा है, परंतु हमारे राजनेताओं ने किसान को मुंशी प्रेमचंद के 'होरी' तक ही सीमित रखा है।

एक बुजुर्ग किसान ने राजनेताओं के वादों को लेकर यह शेर सुनाकर चुप्पी साध लीः–

"वार्ताएँ, घोषणाएँ, योजनाएँ, फैसले इतने, पत्थर हैं सामने और तन्हा आईना निष्कर्ष।"

यह सुनकर मैं हिल गया और मानसिक पीड़ा से भर गया। गाँव का किसान कितना समझदार है और हम उसकी संतानें शहर में बैठकर गाँव से बिल्कुल अनभिज्ञ होकर शहरी हो गए हैं। कहने को पढ़े–लिखे हैं, पर व्यावहारिक दृष्टि से अनपढ़ ।

मैं अपनी बात की पुष्टि करने के लिए मैं चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत, भारतीय किसान यूनियन के अध्यक्ष, का वह साक्षात्कार प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो उन्होंने 'धर्मयुग' पत्रिका के संवाददाता हरिशंकर जोशी को दिया था और 16 दिसंबर 1990 के अंक में प्रकाशित हुआ था।

सवाल – देवीलाल ने गाँव बनाम शहर, की लड़ाई का मुद्दा उठाया है। यह वास्तव में कोई मुद्दा है या राजनीतिक चाल?

राजनीतिक चाल कैसी? राजनीति तो कूटनीति में परिवर्तित हो चुकी है और इस नीति का वास्ता सत्ता के गलियारों से है। हमें इससे क्या वास्ता? हम तो सीधे–सादे किसान हैं। अब किसानों में जागृति आ गई है, तो वे अपना हक माँग रहे हैं। वैसे 'गाँव बनाम शहर' की राजनीति तो सभी नेता कर रहे हैं, चाहे वह वी.पी. सिंह हों, देवीलाल हों या राजीव गांधी।

सवाल – तो आपकी नजर में 'गाँव बनाम शहर' की लड़ाई क्या वास्तव में कोई मुद्दा है?

नहीं, ऐसा नहीं है। यह मुद्दा शहर और गाँव का नहीं है। न हर शहरी देहाती का दुश्मन है और न हर देहाती शहरी का। यह मुद्दा चौधरी चरण सिंह ने चुनाव जीतने से पूर्व ही उठाया था और वे समय–समय पर इस मुद्दे को जनता के सामने लाते रहे।

सवाल – आप इसे थोड़ा स्पष्ट करेंगे?

इसमें स्पष्ट करना क्या ? सभी जानते हैं कि 'लुटेरे' कौन हैं और कमेरे कौन? इस देश में पूंजीपति सत्ता से रिश्ता जोड़कर किसानों का लहू चूसते हैं। किसान से उसकी फसल कच्चे माल के रूप में कौड़ियों के मोल खरीद ली जाती है और चिमनियों से धुआँ उगलती औद्योगिक इमारतों में उसी उत्पाद को तैयार माल बनाकर कई गुना मुनाफे पर बेचा जाता है। अपने हाड़–मांस गलाकर खेती करने वाला किसान हमेशा अपने हिस्से की छोटी–सी कमाई के लिए तरसता रहता है। कई गुना मुनाफा कमाने वाले लोग कौन हैं? वहीं लूटेरे हैं, इन्हीं को शहरी कहा जाता है?

सवाल – पर अब तो कृषि उत्पाद के अच्छे मूल्य मिलने लग गये हैं। पहले गन्ना 15 रुपये प्रति क्विंटल के भाव में बिकता था। अब सरकार एक क्विंटल गन्ने के लिए 40 मूल्य देने लगी है ?

महँगाई नहीं बढ़ी क्या? पक्के माल की कीमत भी दुगनी–तिगुनी दर से बढ़ गई है यह सब चाल है। किसान अपना हक नहीं माँगेगा तो उसे कुछ नहीं मिलेगा। पर यह लड़ाई लंबी है और किसानों को भड़काने तथा बाँटने की कोशिश भी हो रही है। अब तो किसान दशक भी मनाया जायेगा, लेकिन किसान अब समझदार हो चुका है। सैंकड़ों साल डकेती डाललने के बाद यदि कोई एक द्विज महाभोज कर दे तो गरीब के दान दक्षिणा दे तो क्या वह परम संत हो जायेगा ? आजादी के बाद किसानों को तरह–तरह से बेवकूफ बनाया गया है। पहले जमीन में गोबर डालकर फसल हो जाती थी, अब यूरिया डालना पड़ता है। यही यूरिया किसान को उत्पादन लागत से कई गुना अधिक कीमत पर मिलता है। किसान से बीज खरीदा जाता है और वही बीज मुनाफा लेकर उसे वापस बेचा जाता है।

सवाल – तो क्या सरकार भी इन लुटेरों में शामिल है?

ये मुझ जैसा सीधा–सादा किसान क्या जाने? मैं पहले ही कह चुका हूँ कि लड़ाई खद्दर पहनने और टेरीलॉन कपड़े पहनने वाले के बीच की नहीं है। फिर झगड़ा तो 'टोपीवाले' करवाते है? अपनी कुर्सी के लिए राजनेता गरीब जनता को आपस में लड़वाते रहते हैं, ताकि उनके स्वार्थ की सिद्धि होती रहे। उनका फार्मूला है कि "बाँटो और लूटो।" आँख खुली हो तो देख लो, क्या गांधी के हिन्दस्वराज, की यही कल्पना थी ?

सवाल – 'गाँव बनाम शहर' यानी कमेरे और लुटेरों की लड़ाई में आपकी क्या राजनीति होगी?

यह सब गोपनीय है।

सवाल – क्या यह कुर्सी की राजनीति से उछाला महज एक नारा–बाजी तो नहीं है, जिसमें आप भी उलझ रहे हैं?

किसान अब समझदार हो गया है। अब उसे 'औजार' बनाना मुश्किल होगा।

आप खुद को जैसा मानते हैं धीरे–धीरे वैसे ही बन जाते हैं.. इसलिए खुद को भाग्यशाली, शक्तिशाली और सफल मानिए।

क्या वाकई किसान समझदार हो गया है? किसान आज भी भोला है, दुनिया के फरेबों से अनजान है। वह शोषित और कर्जवान आज भी है। तीन–चौथाई किसान किसी न किसी रूप में कर्ज के बोझ तले दबे पड़े हैं। उसकी खेती पर कर्ज का साया है और उसकी काश्त की जमीन बैंकों के पास गिरवी पड़ी है।

पहले किसानों की जमीन बनियों के पास गिरवी पड़ी होती थी। अब बैंकों के पास गिरवी पड़ी है। बनियों के पास पड़ी गिरवी जमीन किसान मसीहा चौधरी छोटूराम ने छुड़वाई थी। अब बैंकों के पास गिरवी पड़ी जमीन को कौन छुड़ाएगा? किसानों पर बैंकों का कितना कर्ज है, इसका अनुमान लगाना भी मुश्किल है।

किसान मसीहा चौधरी छोटूराम कहा करते थे कि किसान एक बहुत बड़ी त्रासदी का नायक है वह चलता–फिरता दुख है। आज के हालात को देखूँ तो मैं मानूँगा कि किसान रेंगता–रेंगता राजनीतिज्ञों की गगनचुंबी इमारत की दहलीज पर आ खड़ा हुआ है और फरियाद कर रहा है। 'कर्ज के बोझ से कुबड़ा हो गया हूं, निजात दीनहीन के खुदा।' पर आज फरियाद तो अमीर को अमीर बनाने की सुनी जाती है। इस हालात में मैं तो यही कहूंगा –

"कुबड़े होकर मत जीओ, उठो!
अपने को संगठित कर, अपनी शक्ति को पहचान और दीन एवं निर्बल भावना से अपना दामन छुड़ाओ।
फिर देखो, अन्नदाता तुम हो और जहाँ का रहनुमा भी तू"

क्या राष्ट्रवाद चू-चू का मुरब्बा है।

– डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार, (मो० 9991816826)

राष्ट्र कोई एक–दो दिन या वर्ष तो क्या शताब्दियों की भी निर्मित कहाँ है। उसका नव निर्माण सहस्त्राब्दियों में जाकर कहीं हो पाता है। हमने पूर्व मध्यकालीन इतिहास का भी तो अध्ययन किया है। वहाँ पर गूर्जर प्रतिहारों से लेकर पालों और राष्ट्रकूटों से लेकर चन्देल और कल्चुरियो तक का भी सतत सत्ता संघर्ष हमें दिखाई देता है। एक समय तो गूर्जर प्रतिहार ही सम्पूर्ण उत्तरापथ से पूर्वांचल तक के भी स्वामी थे। जम्मू–कश्मीर से लेकर नर्मदा तट तक भी तो जिसकी शासन–सत्ता स्थापित हो जाया करती थी, वही राजा या वंश ही तो चक्रवर्ती भी कहलाता था। गूर्जर प्रतिहारों का पतन विद्याधर चंदेल द्वारा किया गया था। महमूद गजनवी के आक्रमण के उपरान्त तो तभी कलचुरि भी बुन्देलखंड के कालिजर से चलकर उत्तरापथ से मालवा तक के भी स्वामी बन बैठे थे। जब कन्नौज में त्रिर्गुटा सत्ता–संघर्ष गूर्जर प्रतिहारों तथा पालों और राष्ट्रकूटों के मध्य में हुआ था तभी दक्षिण से आकर गहमर गाँव के वही गहडवाल तथा बंदायू के ही तो राष्ट्रकूट से बिगड़कर राठौर बनने वाले राजपुत्र ही तो कन्नौज से लेकर मालवा तथा महाराष्ट्र से लेकर कर्नाटक तक के भी स्वामी बन बैठे थे। क्योंकि मालवा से लेकर बडौदा के संखेडा गाँव तक उनके शिलालेख यदि उत्तर भारत में मिलते हैं तो कर्नाटक की बैगी में भी उनके ही पदचिन्ह हमें दिखाई देते हैं।

चालुक्यों या सोलेंकियों के वातापी या बादामी (दक्षिण) से आकर सत्ता सम्पन्न बनने के उपरान्त भी वही राष्ट्रकूट या राठौर राजस्थान के मंडौर (जोधपुर) और कुरू–जांगल या बीकानेर संभाग के तो स्वामी पन्द्राहवीं–सोलहवीं शताब्दियों से लेकर स्वतन्त्रता पूर्व काल तक भी बने रहे थे। जबकि मेवाड के राणा भी कभी बल्लभी–खंभात से उजडकर ही इधर आहड से स्वामी बने थे। वरना उनसे पूर्ववर्ती शासक तो वहाँ के भी मानमौर्य (मोर जाट) और चित्रक जैसे ही थे। जिनमें नाम पर ही चित्तौड नामकरण हुआ था तो मेवाड मेड पाट का ही संक्षिप्तीकरण है। उससे भी पूर्व वहाँ पर शिवि जनपद के ही मुद्रांक पुरातत्त्ववेताओं को मिले थे।

(क) सत्ता–परिवर्तन के साथ सांस्कृतिक संक्रमण भी हुआ है।

बीच में तो एक बार गूर्जर–प्रतिहारों की शक्ति–सत्ता दुर्बल होने पर उनके सामन्त परमार या पंवार भी बहुत शक्तिशाली बन गये थे। उन्होंने भी कन्नौज और बुन्देलखंड से लेकर मालवा और गुजरात से बिहार के मुंगेर तक अपनी विजय–पताका फहराई थी। परन्तु भोजराज पंवार (955–10) के देहान्त के पश्चात परमार राजसत्ता भी शिथिल हो गई थी। फिर कल्चुरि कर्ण ने अमोघवर्ष राष्ट्रकूट के ही साथ सैन्य संघ बनाकर भी तो उनका शक्तिपात कर डाला था।

अतएव राष्ट्रकूट राजा रूद्रसिंह द्वितीय ने ही तो उज्जैन या अवन्ति में महाकाल मंदिर में स्वनाम से अपनी ही तो पूजा और प्रतिष्ठा रूद्र नाम से आरंभ कराई थी। जबकि शंकरगण नामक दो प्रतापी कलचुरि नरेश भी हो चुके थे तो उधर नन्दि वर्धन भी एक शासक कल्चुरियों का ही था। अतएव कालान्तर में कल्चुरियों के ऊपर अपनी अधिसत्ता स्थापित करके ही तो राष्ट्रकूट शिवशंकर रूद्र के परमपुजारी और कल्चुरि राज उनके ही अधीन बनकर उनके ही तो नन्दि या बैल भी बन गये थे।

इसी प्रकार से एक कालभैरव नामक एक बौद्धभिक्षु भी तो कभी इसी महाकाल का महातान्त्रिक पुजारी रहा था। तो सम्राट हर्ष के समय दिवाकर मित्र था तो नन्दिकेश्वर नामक एक तन्त्राचार्य भी इसी नाम का था। अतएव राजनीतिक सत्ता के परिवर्तन के ही साथ–साथ सांस्कृतिक संक्रमण भी भारत वर्ष में एक समानान्तर रूपेण होता रहा है। बाद में वही राष्ट्रकूट दक्षिण में गुजरात से भी आगे बढकर महाराष्ट्र के नासिक तक भी शक्तिशाली हो गये थे। तो उनके ही तो एक महान शासक दन्ति दुर्ग ने नौवीं शताब्दी में एलोरा की गिरिगुहाओं के मध्य में मेरूमणि के ही समान शिवशंकर का भी तो मंदिर एक विशाल प्रस्तर खंड पर उत्कीर्ण कराया था। बाद में तो वे कर्नाटक के बैंगी तक के भी शासक बन बैठे थे। इधर गुजरात या लाट में यदि मान्यैखेट के चालुक्य सत्ता में आ गये थे तो राजस्थान में राठौर और चौहान जैसे ही तो राजवंश शक्तिशाली थे। बीसलदेव चौहान ने तो अजमेर से भी आगे बढकर दिल्ली और पानीपत तक को भी जीत लिया था। उससे पूर्व तँवरी वंश का ही शासन वहाँ पर रहा था।

(ख) देशी राजा नख–दन्त विहीन हो गये थे।

अतएव मौर्य और गुप्त–साम्राज्यों के पश्चात मुगलकाल तक भी भारतवर्ष राजनीतिक रूपेण एकीकृत कब रह पाया था। वह तो भला हो कि मुगलों ने सारे ही उत्तर–भारत को जीतकर ही तो दक्षिण के बहमनी राज्य और गोलकुंडा की निजामशाही और बेल्लारी की सुल्तानी सत्ताओं को जीतकर भारतवर्ष को एक ही राजनीतिक सूत्र में आबद्ध कर दिया था। तदुपरान्त यही प्रबल प्रक्रिया पुनः आधुनिक काल में प्रथम स्वतंन्त्रता संग्राम के पश्चात विदेशी बिट्रिश साम्राज्यवाद ने भी तो प्रारम्भ की थी।

लॉर्ड डल्हौजी ने 1797–1805 ईस्वी तक के अपने शासनकाल में सहायक सैन्य–सन्धि की नीति अपनाकर ही तो हमारे देशी शासकों को निशस्त्र और निस्तत्व भी प्रकारान्तर से ही कर दिया था। क्योंकि उसने गर्वनर जनरल रहते हुए ही तो यह प्रावधान उनके लिए किया था कि आप लोगों के दीवानी अभियोगों के लिए कम्पनी सरकार की विधि–व्यवस्था उसके न्यायालयों में है। रही जहाँ तक सीमा सम्बन्धी संघर्षों की बात, तो उसके लिए देशी नरेश कम्पनी सरकार की जो भी विशाल सैन्य वाहिनी है, उसका भी सहारा क्रय करके ले ही सकते हैं।

जैसेकि उदाहरणार्थ अवध के नबाव आसफ अली ने ही तो रूहेलखंड बरेली से फर्रूखबाद तक के बंगश पठानों के ही विरुद्ध कम्पनी बहादुर की सैन्य सहायता प्राप्त करी थी। विजयी होने पर बजाय नकद क्षतिपूर्ति की राशि के ही तो भुगतान के तभी तो लखनऊ (लाखनपुर) नगर और कड़ा या इलाहाबाद के पूरे ही जिले या सरकार की कृषि भूमि ले ली गई थी, जिसमें आजकल प्रतापगढ़ और फतेहपुर जैसे जो जिले हैं, वे भी आते हैं।

उसी सहायक सैन्य–सन्धि के आधार पर भारतीय जो देशी राजागण थे, उनको अपनी सहस्राधिक सेना भी अपने ही व्यय पर रखनी होती थी। उसका प्रशिक्षण अंग्रेज सैन्याधिकारी ही किया करते थे और वह वे कम्पनी बहादुर के ही आदेशों पर ही तो युद्ध और संधि–विग्रह भी किया करती थी। ऐसी अवस्था में देशी राज्यों की स्वतंत्रता और स्वयंप्रभूता स्वतः ही तो समाप्त हो चली थी। वैसे भी उनके सिर पर रीजेन्ट या सहशासक भी तो बिठा दिये गये थे।

(ग) देशी नरेश नितान्त निःसत्त्व हो चले थे?

इस प्रकार से उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के आते आते ही तो भारत भर के देशी शासकों ने अपने ही व्यय–भार पर भी तो सैन्य–संभार सजाना छोड दिया था। क्योंकि उनके पास एक प्रकार से फौजदारी प्रकरणों सम्बन्धी सभी अधिकार रह भी कहाँ गये थे। उनकी सकल संविदा तो कम्पनी बहादुर के न्यायालयों ने ही ओट ली थी। बल्कि देशी नरेशों के जो भी पारस्परिक पारिवारिक उत्तरदायी और सीमा–सम्बन्धी विवाद जो भी थे तो उनकी भी पंच प्रवर कम्पनी की सरकार ही बनकर बैठ गई थी। यथा, पंजाब के सिंह महाराजा रणजीत सिंह के प्रबल पराक्रम से अपने अस्तित्व की रक्षार्थ ही तो तीनों ही तो फुलकिया स्टेट अंग्रेज सरकार की ही शरण में गई थी।

उन्होंने अम्बाला की छावनी में जाकर कम्पनी सरकार के जो भी राजनीतिक अभिकर्ता ऑक्टर लोनी थे उनके साथ तभी तो त्रिपक्षीय सन्धि की थी। जिसमें महाराजा रणजीत सिंह की जो भी राज्य सीमाएँ थीं, वे फिरोजपुर के पार सतलुज नदी के पश्चिमी तट तक ही परिसीमत कर दी गई थी। इस प्रकार से वही तो त्रिपक्षीय सन्धि भी कहलाई थी। तभी तो नाभा जींद और पटियाला के ही सिख शासकों ने तो प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में दिल्ली में आकर उखडती हुई आंग्ल सत्ता के पाँव पुनः जमाए थे।

बाद में तो केवल दिवानी या मालगुजारी सम्बन्धी जो भी अधिकार थे, वही केवल देशी नरेशों के पास रह गये थे। केवल पुलिस ही उनकी अपनी थी, प्रशासनिक और न्यायाधिकारी तक भी अंग्रेज बहादुर ही बन बैठे थे। सैन्य–शक्ति का प्रशिक्षण और दिशा–निर्देशन भी तो वही अपने भ्रु–संकेतों पर

खुशियां जीवन में पहले से तैयार नहीं बैठी होती हैं, वह तो व्यक्ति के कर्मों के ऊपर निर्भर होती है।

तब करने लगे थे। तभी तो भारतीय राजाओं और नवाबों ने भी सेनाओं में सैनिकों की भर्तियां भी बन्द कर दी थी। क्योंकि वे उनके लिए तब बस सफेद हाथी ही तो सिद्ध हो रही थीं।

तभी तो १९०५ ईस्वी तक नहीं तो १८१८ ईस्वी में तो विधिवत् देशी राज्यों की आन्तरिक और बाहय सुरक्षा का भी समस्त कार्यभार तब अंग्रेज बहादुर की कम्पनी की सेना और सरकार ने ही तो अपने कंधों पर ले लिया था। तभी तो स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद नखदन्त विहीन देशी नरेशों ने एक–एक करके भारतवर्ष की दसियों लक्षाधिक सैन्य–वाहिनी के सम्मुख आत्मसर्मपण कर दिया था।

(घ) क्या भारत एकाश्म राष्ट्र रहा है, कभी।

तभी तो भारत सरकार के तत्कालीन गृहमंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में भारतीय संघ में सम्मिलित होने की सहमति देने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय भी कहाँ था। वे दस लाख की सुसंघठित सैन्य–शक्ति का साम्मुख्य भी आखिर कैसे कर सकते थे। इसलिए भारत–राष्ट्र की एकता केवल सैन्य–शक्ति से भी स्थापित कहाँ हो पाई थी। हमारी जो सांस्कृतिक एकता भी सहस्त्राब्दियों में स्थापित हुई थी, उसने भी इस महादेश की जो राजनीतिक और भौगोलिक एकता है, उसको भी रूपाकार दिया है।

वर्तमान काल में हमारे तथाकथित सांस्कृतिक राष्ट्रवादी जो भी सत्ताधीश हैं, वे उसकी समग्र विविध ता और बहुलता को विनष्ट करके उसको बलपूर्वक ही एकाश्म बनाना चाहते हैं। इसीलिए तो वे क्षेत्रीय क्षत्रपों की शक्ति–सत्ता को समाप्त करके केवल केन्द्रीय सत्ता को समाप्त करके केवल केन्द्रीय सत्ता को ही सर्वाधिकार सम्पन्न बनाये रखना ही चाहते है। जबकि क्षेत्रीय दल भी तो हमारी जनपदीय जो भी संस्कृति और भाषा एवं परम्पराएँ हैं, उनके ही तो प्रखर प्रवक्ता और प्रतिनिधि भी हैं। आजकल एक भाषा और एक ही धर्म हिन्दू और एक ही राष्ट्र तथा एक ही चुनाव का जो नया नारा हमारी सत्ता व्यवस्था दे रही है, वह हमारी जो संघीयता और बहुलता तथा विविधता को भी तो विनष्ट करने वाला है।

अब जो महिला आरक्षण के नाम पर पुनः परिसीमन का जो षडयन्त्र लोकसभाई स्थानों के लिए रचा जा रहा है। वह भी तो उत्तर भारत और दक्षिण भारत के मध्य में विभाजक रेखा खींचने वाला ही तो सिद्ध होगा। क्योंकि दक्षिण के सभी राज्यों ने परिवार नियोजन की नीति का कुशलतापूर्वक क्रियान्वयन करके उन्होंने अपनी–अपनी जनसंख्या को नियन्त्रित ही तो रखा था। जबकि उत्तर भारत की गोबर–पट्टी के ये यूपी और बिहार जनसंख्या के विकट विस्फोट से ही तो आहत हैं। अतएव नितान्त साधनहीन और निपट निर्धन भी तो हैं। परन्तु नया पुनः परिसीमन कराकर वर्तमान भाजपा की सरकार उत्तर भारत के राज्यों में शताधिक संसद के स्थानों में ही वृद्धि करके अपनी राजसत्ता को सदा के लिए स्थायी बनाये रखना चाहती है।

(ङ) बहुलवाद और संघवाद ही हमारी पहचान है।

जिस प्रकार से मौर्य शासन की स्थापना से पहले कमल–दल के ही समान गण–संघों की शासन सत्ता को साम्राज्य की क्रान्ति ने नितान्त निर्मूल कर दिया थाय वैसे ही वर्तमान की हमारी एकाधिकारी राज–व्यवस्था पर भी भारतवर्ष की समस्त क्षेत्रीय राजनीतिक शक्तियों का समूल संहार ही करके राष्ट्र की एकता और अखण्डता का भी दर्प–दम्भ भी क्यों न भरती फिरें, परन्तु अल्पसंख्यक मुसलमानों के विरुद्ध जो उनके मानस–मण्डल में स्थायी शत्रुता का विषबीज समाया हुआ है, वह भी देश की एकता और अखण्डता को कमजोर करने वाला ही तो है।

आखिर प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और स्वाधीनता संघर्ष में भी तो अल्पसंख्यक वर्गों का भी सक्रिय सहकार भाव सतत रूपेण रहा ही है।

बल्कि जो लोग वर्तमान काल में सत्ता–श्रृंग पर शोभायमान हैं, उनके पूर्वज पुरोधाओं ने तो नरम और न ही तो श्गरमश या क्रांतिकारी किसी भी संघर्ष शिविर में अपनी सक्रियतापूर्वक सहभागिता कहाँ दिखाई थी। तभी तो श्री राहत इन्दौरी जैसे उर्दू के शायर ने स्वाभिमानपूर्वक ही यह कहा था–

सभी का खून शामिल है, इस माटी में,
किसी के बाप का हिन्दोस्तान थोडे ही है।

परन्तु दैव दुर्विपाक से अब ऐसे ही संकीर्ण मानसिकता वाले लोग साम्प्रदायिक बैर–विद्वेष से भरकर ही भारत की एकता और अखण्डता को भी भंग करने को तत्पर हैं। हरयाणा और महाराष्ट्र तथा बिहार और दिल्ली से लेकर बंगाल तक में भी राजनीतिक विजय–दुदभी बजाकर उनकी सत्ता की भूख अभी अधूरी ही है। फिर क्षेत्रीय दलों को येन–केन प्रकारेण छल–बल और सैन्य बल से भी पराजित और प्रताडित करके भी उनको अभी तक भी आश्वस्ति कहाँ मिली है। साम्प्रदायिक सद्भाव और सहिष्णुता एवं सहअस्तित्त्व एवं बहुलता और संघात्मकता जैसे जो हमारे राष्ट्रीय जीवन–मूल्य हैं, उन सबकी विकट बलि वर्तमान सत्ता–व्यवस्था स्वस्वार्थ साधनार्थ क्यों चढा रही है।

कहीं जाना है तो पहले वहां से निकलो जहां अभी आप हो।

Unsung Associates of Mahatma Gandhi - B.G.Horniman

- R.N.Malik, (Mob. 9911078502)

Benzamine Guy Horniman was a British journalist who came to India and worked as Editor of the nationalist newspaper Bombay Chronicles. The paper was started by Sir Ferozeshah Mehta and his colleagues of Congress of Gokhale group. He was born in 1873 and died on Indian soil in Bombay in October 1948. He was the most daring editor India has ever known. To pursue a pro-India policy in a leading newspaper of Bombay during the British era was next to impossible but Horniman did it with aplomb. Rather, he made India his second home and immesed himself completely in the freedom struggle.

Throughout his journalistic career, Horniman stood like the Rock of Gibraltor against all odds and continued to write fearlessly and trenchently against the Raj, lavish lifestyle of princes and the social evils like gambling. He once wrote against Prince Ganga Singh of Bikaner that he spent 20% of the State revenue on himself while the people of his State were buried under heavy debts. He also criticised the Maharaja of Patiala for the same reasons. He aligned himself completely with the freedom movement of Gandhi Ji. Space does not permit to describe all the glimpses of his trenchent writings but one sample will suffice to illustrate his commitment to India's freedom struggle.

When the Viceroy Lord Linlithgo offered a lukewarm assurance of some kind of political consideration for the Dominion Status in lieu of total support from the Congress party for the efforts of the 2nd World War, Horniman wrote,* After a prolonged period of gestation, the Viceroy has produced a small mouse, the insignificance of which cannot be disguised by his longwinded and redundant statement which is a sheer denial of independence.,*

Horniman started his journalistic career at the Portsmouth Daily Eveninger in 1894. Thereafter, he worked with several dailies including Manchester Guardian before coming to India in 1906 to work with the English daily Statesman in Calcutta as it's News Editor. After 7 yrs of working, he joined Bombay Chronicle as it's Editor. The paper became a trenchent and powerful anti-colonial voice and mouthpiece of India's freedom struggle under the leadership of Mahatma Gandhi. Thereafter, he founded the Press Association of India, a union of working journalists aimed at protecting the Freedom of Press against the draconian laws and administrative encroachments on its liberty. As President of this august body, Horniman fought ferociously for the Press Freedom and frequently petitioned before the Governor of Bombay and the Viceroy of India against brazen misuse of Defence of India Act.

Following the Jallianwala Bagh tragedy on 13th April 1919, Horniman smuggled out photographs of firing on the innocent civilians and broke the story in the Deccan Herald of Labour Party in England. The expose unleashed a wave of revulsion and anger among the British public. As a consequence, one of the correspondent of Deccan Herald , Goverdhan Das was jailed for three years for releasing State secrets. The paper was temporarily closed and Horniman was deported to England.

Horniman returned to India in 1926 and resumed his duties as Editor of Bombay Chronicles. However, he was sacked after a fortnight as the Board of Management did not accede to his condition of becoming as one of the Directors of the Board simultaneously. Despite his sacking, many wealthy barons were anxious to have Horniman to launch their own newspapers. As a result, for next four years, Horniman edited three newspapers namely Indian National Herald, Weekly Herald and Daily Herald. Eventually, he was recalled by Bombay Chronicles to start a new daily evening paper named Bombay Sentinel where he worked as Editor for 11 years. In December 1944, he was unceremoniously sacked and even his accumulated leave salary was not released.

After his sacking, Horniman lived in total obscurity with only rupees 35000 in his pocket. There are no records to show how he passed the last days of his life till his death on 16th December 1948. Bombay Sentinel published the news of his death stating that Horniman died of heart attack in a Bombay hospital. Rich tributes were paid to Horniman by other newspapers on his death but these were of little use then. Nobody came to his rescue when he was passing through the most difficult phase of his life and unable to pay even the medical bills. Strangely, even Congress leaders did not bother to help him even though they had all been

released in June 1945. Even Gandhi Ji was in Pune after his release in May 1944 and he never bothered to know about the whereabouts of Horniman. In fact, Horniman was among the 20 signatories to the pledge published by Gandhi Ji in March 1919 declaring their intentions for open defiance of the Rowaltt Act and the British authority. This declaration was the first of its type after the First War of Independence of 1857. The ignorance of Horniman by Congress leaders, newspaper management and friends during his worst phase of life shows the fragility of human relationships in India and elsewhere. By all accounts, Horniman was more of a freedom fighter than a journalist of great repute.

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 29.10.94) 31 BAMS, M.D. (Ary). Kayachikitsa from GGSIPU New Delhi. Working as Medical Officer (Group A) on regular basis in Ayurvedic Medical College National Institute of Ayurveda, Ministry of AYUSH, Sector 4, MDC Panchkula. Income Rs. 16-20 LPA. Father Inspector in Delhi Police. Mother housewife. Own residence in Delhi. Avoid Gotras: Grewal, Malik, Jakhar. Cont.: 8383850692
- SM4 Jat Girl (DOB 09.12.98) 27/5'6" B.Com. from GGDSD College, Chandigarh. Working as UDC in ESIC Haryana since 2023, posted at Faridabad. Father ASI in Chandigarh Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Mann, Deswal, Sihag, Dalal, Dagar. Cont.: 9464258526, 9417187325
- SM4 Jat Girl (DOB 07.08.93) 33/5'5" C.A. Working as Auditor in a US based Company. Father in Chandigarh Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Chahal, Dahiya, Dhankhar. Cont.: 9855342900
- SM4 Jat Girl (DOB 09.11.99) 26/5'4" B.Sc. Noun Medical, B.Ed, CTET-I and CTET-II cleared, 12th PCM. Working as Teacher in Chandigarh. Father retired from Army. Mother housewife. Avoid Gotras: Teotia, Nadar. Cont.: 9646729365
- SM4 Jat Girl (DOB 1990) 36/5'7" Working in Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Sura. Cont.: 9888626559
- SM4 Jat Girl (DOB 22.12.2000) 25/5'6" B.Sc. Computer Science. Hons. From D. U. MCA, NIT from Alahabad. Working as Software Engineer Deutsche Bank (Campus Placement) Salary Rs. 8LPA. Father Working as Manager in F & A Rattanindia Power Ltd. Delhi. Mother housewife. Avoid Gotras: Siwach, Jakhar, Gehlawat. Cont.: 8800534445
- SM4 Jat Girl (DOB 11.09.97) 28/5'4" B.Sc., M.Sc. from MDU. B.Ed. CTET. Preparing for government job. Father & mother retired from government service. Own house in Rohtak. Avoid Gotras: Gill, Sangwan, Khatri. Cont.: 8053576293, 9416657051
- SM4 Jat Girl (DOB 17.10.99) 26/5'3" M.A. Geography. B.Ed. Library Diploma. CTET qualified. Father Hindi Government Teacher. Mother housewife. Avoid Gotras: Siwach, Goyat, Sangwan. Cont.: 9466473177
- SM4 Jat Girl (DOB 01.10.94) 31/5 feet. MBA H.R. Father in Chandigarh Police. Family living in Panchkula. Avoid Gotras: Hooda, Dalal, Lakra. Cont.: 8283000022
- SM4 Jat Girl (DOB 20.06.2000) 26/5'1" B. Com, B.Ed. Father businessman. Avoid Gotras: Lakra, Malik. Cont.: 9216000072
- SM4 Jat Girl (DOB 28.10.98) 27/5'4" B.A. LLB (O. P. Jindal University). Profession Advocate. Working with International Law Firm. Salary Rs. 3 lac per month (36-40 LPA). Father Advocate in Punjab & Haryana High Court Chandigarh. Mother Senior Officer, General Manager in a Corporation of Haryana. Family settled at Panchkula. Preferred IAS/IPS/Judicial Officer or well established professional/Businessman from reputed family background. Avoid Gotras: Badhran, Goyat, Maan. Cont.: 9417203810
- SM4 Jat Girl (DOB 11.02.98) 28/5'5" M. A. English from Punjab University, Computer Diploma, B.Ed., CET qualified. Working in Private Company at Mohali. Father retired Superintendent from Haryana Government. Mother House wife. Preferred match Chandigarh/Tricity. Family settled at Zirkpur (Punjab). Avoid Gotras: Dahiya, Balyan. Cont.: 6239058052
- SM4 Jat Girl (DOB 01.05.94) 31/5'2" M.A. English from Punjab University. JBT. B.Ed. from Punjab University. CTET-tgt. Thrice, HTET-jbt. Four times, HTET-pgt. Twice, TET-jbt. Twice. Working as Government primary teacher in Punjab near Chandigarh. Father Deputy Manager in HMT. Pinjore. Mother housewife. Avoid Gotras: Sangwan, Phogat, Pilania. Cont.: 9416869289
- SM4 Jat Girl (DOB 28.02.93) 31/5feet. B. Tech. in Computer Science, Diploma in Computer Science, M. Tech. in Software Engineering. Working in reputed MNC at Chandigarh. Salary Rs. 8 LPA. Father retired Divisional Head Draftsman from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Sheoran. Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Boy (DOB 09.03.2001) 25/5'7" M.Sc. Biotechnology DCRUST University. Working as Quantity Control Officer Pharma Industry Poanta Sahib (H.P.) . Income Rs. 3 LPA. Own residence at Ganour (Sonepat). Avoid Gotras: Ghanghas, Rathee, Duhan. Cont.: 8930486482
- SM4 Jat Boy (DOB 1994) 32/ Architect by Profession. Avoid Gotras: Malik, Khatkar. Cont.: 9888626559
- SM4 Jat Boy (DOB 24.11.94) 31/5'11" B. Tech. Mechanical. Data Analysis Courses from Punjab Engineering College Chandigarh. Father S.I. in Chandigarh Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Rana, Rathee, Antil. Cont.: 8360603481, 9417374072
- SM4 Jat Boy (DOB 15.11. 95) 30/ 6 feet. B.Tech CSC. Working as Senior Manager at Novartis Hyderabad. Package Rs. 55 LPA with hybrid job. Father retired from Air Force. Mother housewife. Own house at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Lakra, Malik, Mann. Cont.: 7989389447
- SM4 Jat Boy (DOB 02.02.97) 29/ 12th Medical and Non-medical, M.A. (History). Working as Collection Manager in HDFC Bank. Avoid Gotras: Pawar, Siwach, Ahlawat. Cont.: 9317958900
- SM4 Jat Boy (DOB 03.08.99) 27/ B. A. History (Hons.) from GTB Khalsa College, D.U. LLB, LLM from Faculty of Law, DU. Private International Law, International Court of justice, Netherlands. Law & A.I. from Landon School of Economics. Now practicing in

Punjab & Haryana High Court Chandigarh. Residence in Chandigarh. 8 acre agriculture land, flat in Delhi, Farm House and Shop (Commercial property) in Samalkha. Avoid Gotras: Phour, Malik, Khatri. Cont.: 9466095995, 9416640442.

- SM4 Jat Boy (DOB 10.05.99) 27/5'10" M. A. from D.U. Diploma Health Inspector. Employed as Constable in Haryana Police. Father in Government service. Mother housewife. Brother in Chandigarh Police. Avoid Gotras: Sangwan, Ahlawat, Jangu. Cont.: 9718720065
- SM4 Jat Boy (DOB 27.04.93) 33/6'2" B. Tech from Punjab Technical University. Working as Clerk in High Court Chandigarh. Father after retirement working in Air Force and Haryana Education Department. Mother retired teacher. Avoid Gotras: Malik, Kundu, Dalal. Contact:7340867216
- SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 27/5'9" B. A. M.A. D-Pharmacy. Own Pharmacy shop. Father farmer. Mother housewife. Three acre agriculture land. 150 gaj plot in Rohtak, 200 gaj plot in village. Avoid Gotras: Phaugat, Rana, Tehlan. Cont.: 9306403477
- SM4 Jat Boy (DOB 16.04.98) 28/5'8" Employed in Judicial Department as Clerk at Tarn Taran. Father retired from HSVP. Mother housewife. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Mehlawat, Joon. Cont.: 9877797632
- SM4 Jat Boy (DOB 27.07.98) 28/5'4" B. Tech. in Computer Science from Kurukshetra University. Post Graduate Diploma in Cloud Computing from Loyalist College, Canada. Working as Food Supervisor in Toronto (Work Permit). Father Medical Shop in Ambala. Mother in Government job. Elder sister married, settled in Canada. Avoid Gotras: Mor, Panwar. Cont.: 7015484270,
- SM4 Jat Boy (DOB 21.08.95) 31/5'9" B. Tech. in Mechanical Engineering. Working as Manager Digital Marketing in a reputed MNC at Pune. Salary Rs. 12 LPA, Freelancing business. Father retired from PGIMER Chandigarh. Mother housewife. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Dabas, Sangwan, Dhankhar. Cont.: 75089229045, 9779132009
- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.96) 29/5'9" Graduate & Post graduate from S.D. College Chandigarh. Occupation: Business. Father Businessman. Mother housewife. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Panghal, Moond, Sangwan. Cont.: 7986350696
- SM4 Jat Boy (DOB 13.02.96) 30/5'8" B. Tech. from PICT (Pune). P. G. from DAC Pune. Working as Software Engineer in Lowe's Banglore. Package Rs. 22 LPA. Father retired Honorary Flying Officer. Mother housewife. Family settled in Zirakpur. Avoid Gotras: Khatkar, Chahal, Saharan. Cont.: 9101241162
- SM4 Jat Boy (DOB 03.10.94) 31/5'11" B. Tech. Software Engineer. Income Rs. 18 LPA. Father Professor retired. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Tomar, Malik. Cont.: 9463742136
- SM4 Jat Boy (DOB 09.01.80) 36/5'7" B.E. in Electrical & Communication. MBA in General Management. Working as Associate Director, Management Consulting Company-ForvisMazars. Income RS. 35.5 lakh per year. Father retired Doctor. Mother retired Teacher. Own house in Panchkula, Banglore. Avoid Gotras: Phogat, Lamba, Ahlawat. Cont.: 9900107055
- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.92) 30/5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from Government job. Mother in private job. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan, Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 27/5'9" B.A., MA, D.Pharmacy. Job: Pharmacy Shop. Three acre agriculture land. One plot in Rohtak. Avoid Gotras: Phogat, Rana, Tehlan. Cont.: 9306403477
- SM4 Jat Boy (DOB 29.03.99) 27/5'7" Post Graduate in Psychology. Serving in Indian Navy at Mumbai. Salary Rs. One lakh PM. Father businessman. Mother housewife. Family settled at Panipat (Haryana). Avoid Gotras: Ahlawat, Mor, Malik. Cont.: 9466701215
- SM4 Jat Boy (DOB 09.11.98) 27/ 6 feet. MA, History. Employed as Clerk in Haryana Government on regular basis. Avoid Gotras: Pattar, Gill, Nehra. Cont.: 8264141578
- SM4 Jat Boy (DOB 14.10.98) 27/5'9" B.Sc. Medical, B.Ed. (Biological Science). CTET, HTET cleared. Employed in Chandigarh Police. Father's self car sale, purchase business. Family settled at Ganaur (Sonepat). Avoid Gotras: Chhikara, Deswal, Malik. Cont.: 9518002197, 8813970974
- SM4 Jat Boy (DOB 11.01. 2003) 23/5'9" B.A., B.Ed., M.Sc. in Geography. Father farmer. Mother housewife. 5.6 acre agriculture land. Avoid Gotras: Dahiya, Suhag, Dabas. Cont.: 7837332515
- SM4 Jat Boy (DOB 18.05.96) 29/5'10" B. Tech. PDM Bahadurgarh. Master (Finance) from Whu Otto Beisheim College Germany. Working as Equality Analyst in Kanou Capital New Delhi MNC, Headquarter in London (U.K.) Package Rs. 18 LPA. Father retired from Army, now Clerk in Oriental Bank of Commerce. Avoid Gotras: Dalal, Kadyan, Dahiya. Cont.: 8708370617, 9416823236
- SM4 Jat Boy (DOB 25.12.97) 28/5'8" Bachelor of Commerce. Working as Assistant Manager in IDBI Bank. Avoid Gotras: Sangwan, Kaswa, Jangu. Cont.: 9068574655

हर युवा में 'गाँधी' बसा है ...!

– सुखदीप सांगवान

युवा–शक्ति को मान गए सब,
तुम्हारे 'मान' को जान गए अब,

ठान लिया तो निकल पड़े,
और भीड़ बन कर उमड़ पड़े,
लक्ष्य से तुम सब, रहे बंधे,
अडिग दिखे, और रहे सधे,

लाठियां खाई और गिर पड़े,
लहू–लुहान तुम रहे अड़े,
आँसू गैस और छर्रे चले,
पर जैन्न–जी वाले डटे रहे,

युवतियों ने तो कमाल किया,
भय का नहीं इजहार किया,
निडरता से आगे आयी,
निर्भीकता से लाठियां खाई,

कमाल किया है 'जैन्न–जी' तुमने,
अहिंसा की लौ, नहीं दी बुझने,
दुनिया को फिर दिखला दिया है,
हर युवा में गाँधी बसा है,

यहाँ हर युवा में गाँधी बसा है।

हमें जिन पर गर्व हैं

खेल स्कूल निडानी की तीन बेटियां एशियाई खेलों में दिखाएंगी दम

एक ही खेल स्कूल से निकलीं प्रिया मलिक, मनीषा भनवाला और निशा दहिया; हरियाणा की कुश्ती प्रतिभा का बढ़ा गौरव

जींद, 12 सितंबर (रवि शर्मा) : जापान के आईची-नागोया में होने वाले एशियाई खेलों में भारत की महिला कुश्ती टीम में हरियाणा की कई प्रतिभाशाली पहलवान हिस्सा लेंगी। इनमें जींद जिले के गांव निडानी स्थित चौधरी भरत सिंह मेमोरियल खेल स्कूल की तीन बेटियां प्रिया मलिक, मनीषा भनवाला और निशा दहिया शामिल हैं। तीनों ने इसी स्कूल से कुश्ती की बारीकियां सीखकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई हैं। एक ही संस्थान से तीन पहलवानों का एशियाई खेलों के लिए चयन होना क्षेत्र के लिए गौरव की बात है।



प्रिया मलिक (57 किग्रा)



मनीषा भनवाला (76 किग्रा)



निशा दहिया (68 किग्रा)


डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक
संरक्षक, खेल स्कूल निडानी

57 किलोग्राम भार वर्ग में प्रिया मलिक, 68 किलोग्राम में निशा दहिया और 76 किलोग्राम भार वर्ग में मनीषा भनवाला भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी। तीनों पहलवानों की उपलब्धियां इस बात का प्रमाण हैं कि ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित खेल संस्थान भी विश्वस्तरीय खिलाड़ी तैयार कर सकते हैं।

अंतरराष्ट्रीय पदकों से चमका निडानी स्कूल

21 वर्षीय प्रिया मलिक मूल रूप से निडानी गांव की रहने वाली हैं और भारतीय सेना में सुबेदार के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने कई वर्षों तक चौधरी भरत सिंह मेमोरियल स्कूल में प्रशिक्षण लिया और वर्ष 2023 में 12वीं कक्षा पूरी की। वह आज भी कुश्ती अभ्यास से जुड़ी हुई हैं।

28 वर्षीय मनीषा भनवाला जींद के सिवाहा गांव की निवासी हैं और रोहतक के सर छोटूराम स्टेडियम में अभ्यास करती हैं। उन्होंने वर्ष 2015 में निडानी से कुश्ती की शुरुआत की थी। मनीषा ने 2022 से 2025 तक लगातार चार वर्षों तक सीनियर एशियाई कुश्ती चैंपियनशिप में भारत के लिए पदक जीते। पिछले चार वर्षों में उनका प्रदर्शन बेहद शानदार रहा है। वह वर्तमान में जूनियर कोच के रूप में भी सेवाएं दे रही हैं।

27 वर्षीय निशा दहिया पानीपत के अहरियाना गांव की निवासी हैं। उन्होंने वर्ष 2011 में निडानी के खेल स्कूल में आठवीं कक्षा में दाखिला लिया और यहीं से कुश्ती का सफर शुरू किया। निशा ने 2024 पेरिस ओलंपिक में 68 किलोग्राम भार वर्ग में भारत का प्रतिनिधित्व किया था। वर्तमान में वह रेलवे में सीनियर टीटीई के पदपर कार्यरत हैं और रोहतक के सत्यवान अखाड़े में अभ्यास कर रही हैं।

प्रिया ने जीता अंडर-23 एशियाई चैंपियनशिप में स्वर्ण

प्रिया मलिक ने वर्ष 2025 में वियतनाम में आयोजित अंडर-23 एशियाई कुश्ती चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया था। वहीं मनीषा ने सीनियर कुश्ती रैंकिंग सीरीज में रजत पदक हासिल किया।

निडानी बना कुश्ती की नर्सरी

चौधरी भरत सिंह मेमोरियल खेल स्कूल निडानी को लंबे समय से कुश्ती प्रतिभाओं की नर्सरी के रूप में पहचान मिली हैं। वर्ष 2024 के पेरिस ओलंपिक में भी इस स्कूल से प्रशिक्षण प्राप्त दो पहलवानों ने भारत का प्रतिनिधित्व किया था। इसी वजह से निडानी खेल स्कूल को कुश्ती के क्षेत्र में विशेष पहचान मिली हैं।

डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक ने दी बधाई

संस्था के संरक्षक हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक ने तीनों पहलवानों को एशियाई खेलों के लिए चयनित होने पर बधाई देते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की बेटियों का अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुंचना पूरे हरियाणा के लिए गर्व की बात हैं। उन्होंने कहा कि खेल प्रतिभाओं को उचित प्रशिक्षण, सुविधाएं और प्रोत्साहन देकर देश के लिए और भी बड़े खिलाड़ी तैयार किए जा सकते हैं।

आनन्द लाठर ने जताया भरोसा

संस्था के प्रवक्ता आनन्द लाठर ने कहा कि निडानी की इन तीनों बेटियों ने अपनी मेहनत, अनुशासन और संघर्ष के दम पर पूरे क्षेत्र का नाम रोशन किया हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि एशियाई खेलों में तीनों पहलवान शानदार प्रदर्शन कर देश के लिए पदक जीतेंगी और आने वाली पीढ़ी की बेटियों के लिए प्रेरणास्रोत बनेंगी।

> "ग्रामीण क्षेत्र की बेटियां आज विश्व मंच पर हरियाणा का मान बढ़ा रही हैं।
> – डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक
> संरक्षक, खेल स्कूल निडानी







उपरोक्त सभी की उम्मदा उपलब्धि पर जाट सभा चण्डीगढ़, पंचकूला एवं चौ0 छोटूराम सेवा सदन कटरा–जम्मू के समस्त कार्यकारिणी तहदिल से अभिनन्दन व आभार व्यक्त करते है और इनके व समस्त परिवारों के सुखद स्वास्थ्य एवं मंगलमय भविष्य के लिये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है।

प्रयास तो आपको ही करना पड़ेगा, भगवान तो केवल मार्ग बताते हैं।

आर्थिक अनुदान की अपील



जैसा कि आपको विदित है कि जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान, कटरा–जम्मु में 10 कनाल भूस्थल पर दीनबंधु चौ० छोटूराम यात्री निवास के नाम से एक विशाल बहुमंजलीय भवन का निर्माण किया जायेगा। यात्री निवास के निर्माण, विस्तार व रख–रखाव आदि पर वर्ष 2019 से अब तक लगभग 2,73,61,634 (दो करोड़ तिहत्तर लाख इकसठ हजार छह सौ चौंतीस) रुपये की राशि खर्च हो चुकी है और लगभग 76,47,200 (छिहत्तर लाख सैंतालीस हजार दो सौ) रुपये अनुदान के तौर पर प्राप्त हुये। इसके बावजूद आप सब के सहयोग से यात्री निवास स्थल पर शौचालय व बाथरूम सहित पांच वातानुकुलित डबल बैड कमरों व 15 बैड की डोरमैट्री के निर्माण से यात्रियों के ठहरने व विश्राम हेतु अस्थाई तौर पर उचित व्यवस्था कर दी गई। यात्रियों की सुविधा के लिये भोजन की व्यवस्था हेतू कैन्टीन का निर्माण कर दिया गया है।

इस प्रस्तावित यात्री भवन के निर्माण में कुछ स्थानीय प्रशासनिक व भूगोलिक तकनीकी दिक्कते आ रही है। इसलिये बुहमंजलीय भवन का निर्माण कार्य प्रशासन की स्वीकृति मिलते ही शुरू कर दिया जायेगा और हमें पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग व माता वैष्णों देवी की कृपा से इस विशाल प्रोजैक्ट का निर्माण अवश्य पूरा होगा।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। इसके अलावा भवन निर्माण हेतू 11,000 रुपये या अधिक राशि देने वाले सभी दानी सज्जनों का अनुदान बोर्ड यात्री निवास परिसर में शीघ्र लगाया जा रहा है। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : **0172-5086180, M-9877149580**
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870,M-9467763337
Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू M-9320693332

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोसियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।